प्रौढ़ और सामाजिक शिक्षा

के

नये प्रयोग

[संयुक्तराज्य अमेरिका की विकास-शिक्षा संस्थायें]

[सचित्र]

●

लेखिका

उर्मिला जौहरी, एम.ए.

कोलम्बिया यूनिवर्सिटी, (यू. एस. ए.)

●

विद्या मन्दिर लिमिटेड, नई दिल्ली

समर्पण

स्वर्गीय माता-पिता श्रीमती तथा डाक्टर
आर. एस. शंकरा की पूज्य स्मृति
में, जिनके स्त्री शिक्षा और
सामाजिक प्रेम के कारण ही
आज इस पुस्तक का
प्रकाशन सम्भव हो
सका।

भूमिका

एक समय था जब प्रौढ़-शिक्षा का अर्थ 'अक्षर ज्ञान' किया जाता था, किन्तु अब वह ज़माना नहीं रहा है। अब पूरी तरह से यह बात महसूस कर ली गयी है कि पढ़ना-लिखना और हिसाब लगाना अपने में खुद कोई मक़सद नहीं बल्कि एक ज़रिया है अपने मक़सद को हासिल करने का—अपने जीवन का सर्वांगीण विकास (All round Development of one's personality) करने का। और गांधी जी के शब्दों में वह भी अकेला नहीं बल्कि बहुत से ज़रियों (साधनों) में से एक। अगर्चे ख्वान्दगी (अक्षर-ज्ञान) की अपनी अहमियत है और रहेगी, लेकिन यह बात साफ है कि प्रौढ़-शिक्षा या अपनी पुरानी ग़लतफहमी को दूर करने के लिये जिसे 'सोशल-एजूकेशन' नाम दिया गया है, उसका मतलब है जीवन भर जीवन के द्वारा जीवन की संपूर्ण शिक्षा (Total Education of Life for Life and through Life).

लेकिन हमारे सामने आज सब से बड़ा और अहम सवाल यह है कि इस काम को करे कौन ? वैसे तो जवाब सीधा सा मालूम होता है—ज्ञानवान अज्ञान को ज्ञानवान बनाये, जो कुछ जानते हैं तो अपनी मालूमात और जानकारी से अपने से कम जाननेवालों और पिछड़े हुओं को रास्ता दिखाएं और उनके लिए मशाले राह (पथ दीप) का काम करें। साथ ही इल्म और ज्ञान के

मरकज़ (विद्यालय, विश्वविद्यालय) इस तालीम की ज़िम्मेवारी लें और इसका भी इंतज़ाम करें। परन्तु जिस बदकिस्मती से हमारा मुल्क अभी-अभी निकला है उसने हमारी पूरी ज़िन्दगी को ही उलटे रास्ते पर डाल रखा था और हमारी शिक्षा का मतलब था हम में अपने आकाओं की 'जी हुजूरी' और 'क्लर्की' करने की काबलियत पैदा करना। ऐसी हालत में जो शिक्षा और शिक्षालय हमें विरासत में मिले हैं वे हमारी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरी करने में बुरी तरह नाकामयाब ही साबित नहीं हुए हैं बल्कि हमारी तरक़्क़ी के रास्ते में ज़बरदस्त रोड़े बने हुए हैं।

वह तालीम तालीम ही क्या जो इंसान को अपनी इंसानियत के ऊंचा उठाने मे—व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व का निर्माण करने और उसका विकास करने में और उसे सामूहिक ज़िम्मेदारी निबाहने में काम न आए। और ज़ाहिर है कि ऐसी तालीम किसी चहारदीवारी या कमरे के अन्दर बैठकर पूरी नहीं हो सकती। उसे हासिल करने के लिए तो आसपास के माहौल और समाज को प्रयोगशाला (Laboratory) बनाना पड़ेगा और उसके मसले सुलझाने और उसकी तरक्की की राहे तलाश करने मे अमली तौर से हिस्सा लेना पड़ेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तवज्जह इस तरफ सब से पहले गयी और उन्होंने नयी तालीम के नाम से एक नयी शिक्षा-पद्धति मुल्क के सामने रखी। पुराने ढर्रे पर चलने वाले तरीके-तालीम की जगह यह नयी पद्धति किस तरह ले इस पर तजुर्बे किये जा रहे

हैं और अन्तरिम काल (Interim period) को जल्दी से जल्दी पूरा करने के लिये मुख्तलिफ़ सरकारी और गैर सरकारी इदारें (संस्थाए) सोशल एजुकेशन और एजुकेशन के मैदान में बराबर कोशिशें कर रहे हैं।

असल में सभी मुल्कों को इस तरह के मसलों और दिक़्क़तों से दो-चार होना पड़ा है या पड़ रहा है। जो मुल्क हम से पहले जाग गए हैं और ज़िन्दगी की दौड़ में हमसे आगे हैं उन्होंने किसी हद तक अपने लिए कुछ निश्चित राहें भी ढूंढ निकाली हैं और वहां उन पर अमल किया जा रहा है। अगर्चे यह सही है कि हर मुल्क के हालात और परिस्थितियां जुदा होती हैं और किसी मुल्क के लिए कौन जीवन-प्रणाली और शिक्षा मुनासिब और उपयोगी होगी यह उस देश की धरती और लोगों के खोजने की चीज है। बहरहाल अपनी कोशिशों में कामयाबी हासिल करने और अपना रास्ता बनाने में दूसरे देशों के तजुर्बों और शिक्षा-प्रणालियों की जानकारी बहुत मुफ़ीद होगी।

बहन उर्मिला जौहरी की प्रस्तुत पुस्तक "प्रौढ़ और सामाजिक शिक्षा में नये प्रयोग" में अमरीका की सोशल एजूकेशन के मैदान में काम करने वाली कुछ संस्थाओं तथा विद्यालयों की ऐसी ही पद्धतियों का ज़िक्र किया गया है। उर्मिला जी एक लम्बे अर्से से समाज शिक्षा और शिक्षा के मैदान में काम कर रही हैं। अपने अमरीका के भ्रमणकाल में उन्होंने वहां के माने हुए शिक्षाशास्त्रियों से विचार-विमर्श करने और वहां के प्रसिद्ध विद्यालयों का निरीक्षण करने

के बाद अपने देश के लिए जो कुछ काबिले तक़लीद (अनुकरणीय) समझा उसे वे मुख्तलिफ मौकों पर मज़ामीन की शक्ल मे रिसालों और अखबारों मे प्रकाशित कराती रही हैं। यह पुस्तक उन्हीं लेखों का मजमुआ (संग्रह) है।

सोशल एजूकेशन के मैदान में काम करने वाले कार्य-कर्ताओं का मार्गदर्शन करने और तरीके तालीम (शिक्षा की नवीन पद्धति) को सफल बनाने में मशगूल (तल्लीन) माहेराने तालीम (शिक्षाशास्त्रियों) के मुआफ़िक फिज़ा (वातावरण) तैयार करने में यह पुस्तक बहुत मदद करेगी इसमें कोई शक नहीं।

७, मेटकाफ रोड, देहली
१२. १. ५३

शफीक-उर-रहमान क़िदवई,
शिक्षा-मन्त्री, देहली राज्य।

आभार-प्रदर्शन

संयुक्तराज्य अमेरिका के उन सभी लोगों को, जिन्होंने मेरे वहां के निवास तथा भ्रमण को शिक्षाप्रद बनाया, मैं आभारी हूं। इस पुस्तक में प्रकाशित अधिकतर ब्लॉक डा० रुथ राइट द्वारा U. S. I. S. तथा श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा भारत सरकार के प्रकाशन विभाग की कृपा से प्राप्त हुए हैं, अतः इन दोनों की मैं अनुगृहीत हूं। भावी नेताओं का निर्माण, ऐमिली ग्रिफिथ का अपरच्युनिटी स्कूल, पारिवारिक सम्बन्ध विज्ञान की शिक्षा, मनोरंजन संबन्धी संस्थायें—'विश्वदर्शन' में पूर्व प्रकाशित इन लेखों के पुनः प्रकाशन के लिये मैं भारत सरकार के सूचना मन्त्रालय के प्रकाशन विभाग की तथा इसी प्रकार 'गृह-निर्मात्रियों का सम्मेलन', 'स्त्रियों को मतदान की शिक्षा' लेखों के पुनः प्रकाशन के लिये साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' की आभारी हूं। न्यू इण्डिया प्रेस के संचालक श्री वेदव्रत जी की मैं कृतज्ञ हूं जिन्होंने समय पर पुस्तक का मुद्रण किया। सब से अधिक 'विद्या मंदिर लिमिटेड' के संचालक श्री रामप्रताप गोंडल की आभारी हूं जिन्होंने लेखों को देखते ही प्रकाशन का भार उठा लिया और उन्हें पुस्तकाकार रूप में पाठकों को भेंट किया।

—उर्मिला जौहरी

चित्र-परिचय

१ नवयुवक किसान मवेशियो की प्रदर्शनी में अपनी गाय का प्रदर्शन कर रहा है।

२ एक कृषक परिवार ट्रक में सब्जियां भर कर प्रदर्शनी के लिये ले जा रहा है।

३ सगीत विशेषज्ञ छात्रायें संगीत द्वारा गृह-निर्मात्रियो का मनोरंजन कर रही है।

४ गृहिणिया अवकाश के समय स्कूल में बुनाई सीख रही हैं।

५ फोर० एच० की एक सभा में नवयुवक तल्लीन होकर भाषण सुन रहे हैं।

६ बालकों को जन्तुओ को प्रेम करना व पालना सिखाया जा रहा है।

७ मिट्टी के खिलौने बनाते हुए बालको का मनोरंजन और शिक्षा साथ-साथ हो रहे हं।

८ नवयुवक 'बेकरी' का काम सीख रहे हैं।

९. एक गृहिणी-छात्रा अच्छे व बुरे अडे परखना सीख रही है।

१०. एक छात्रा करघे पर कपडा बुनने में दक्षता प्राप्त कर रही है।

११. नवयुवक व नवयुवती छात्रों की एक टोली विना मार्ग के पर्वतारोहण कर रही है।

१२. छुट्टियों में कैम्प फायर के निकट गाते हुए बालकों का एक दृश्य।

१३. नेशनल पार्क में एक परिवार पिकनिक कर रहा है।

१४ मछली पकडने के प्राचीन उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये स्थान-स्थान पर विशेष तालाबों का आयोजन किया गया है।

१५ छात्र पुस्तकाध्यक्ष का कार्य करके अपना जीविकोपार्जन कर रहे है।

१६. ग्रामीण बालक नाव में चलते-फिरते पुस्तकालय से पुस्तकें ले रहे हैं।

प्राक्कथन

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भारतवर्ष के सम्मुख दो महान समस्याएं उपस्थित हुईं—एक तो अधिक उत्पादन द्वारा देश का आर्थिक स्तर ऊंचा करना और दूसरी १८०,०००,००० प्रौढ़ों का शिक्षा द्वारा सांस्कृतिक स्तर ऊंचा करना। भारत जैसे पिछड़े देश के 'प्रजातन्त्रवाद' को अपनाने के कारण प्रौढ़-शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। प्रजातन्त्रवाद के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र के नागरिक अपने उत्तरदायित्व और अधिकारों के प्रति सजग हों और देश की आर्थिक, सामाजिक अथवा औद्योगीकरण से आने वाली समस्याओं को समझ सकें और उनके निराकरण में प्रयत्नवान हों, परन्तु इसके लिए यह भी आवश्यक है कि हमारी शिक्षा-सम्बन्धी संस्थाएं भी अपने उत्तरदायित्व को समझें और उनके सामने उनका लक्ष्य स्पष्ट हो।

प्रौढ़-शिक्षा, सामाजिक-शिक्षा, विकास-शिक्षा, ग्रामसुधार-शिक्षा का अर्थ बहुत कुछ मिलता-जुलता तथा एकसा है। परन्तु अधिकतर उन लोगों को जो इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं यह स्पष्ट नहीं है। प्रौढ़-शिक्षा का अर्थ अधिकांश लोग अक्षरज्ञान ही लगाते हैं। यदि हमारा लक्ष्य केवल अक्षरज्ञान प्राप्त कराना है तो अवश्य ही हमें प्रौढ़-शिक्षा और सामाजिक-शिक्षा दोनों को अलग-अलग रखना है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। अतः यह बहुत

आवश्यक है कि इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि साक्षरता, सामाजिक अथवा प्रौढ़-शिक्षा का एक साधन है लक्ष्य नहीं। यदि इस साधन से हमारे कार्य में कठिनाई का अनुभव हो तो यह अधिक अच्छा है कि हम उस समय तक रुक जायें, जब तक कि प्रौढ़-छात्र इस साधन की उपयोगिता को समझकर खुद ही उसके लिए उत्कण्ठित न हों। हर्ष का विषय है कि गत कुछ वर्षों से इस भ्रम के निवारण के लिए काफी प्रयत्न किया गया है और आज राष्ट्र मे जो सामाजिक आंदोलन चल रहा है, वह इसका ही परिणाम है। सन् १६४६ में माईसोर के सेमिनार में श्री हुमायूं कबीर ने प्रौढ़-शिक्षा की उत्तम परिभाषा की थी। आपने कहा था—"प्रौढ़-शिक्षा स्वतन्त्र समाज के स्वतन्त्र व्यक्तियों के लिए होनी चाहिए। इसका अर्थ केवल अक्षर-ज्ञान नहीं है। हमे निरक्षरता (अज्ञान) को नष्ट-प्राय करना होगा। लोगों के जीवन-स्तर को, उनके रीति-रिवाज तथा पारिवारिक जीवन में सुधार करके, ऊपर उठाना होगा और उनके आर्थिक स्तर को प्राचीन दस्तकारी व घरेलू उद्योगों में नये प्रयोगों के समावेश द्वारा ऊपर उठाना होगा। प्रौढ़-शिक्षा द्वारा ही नागरिक उत्तरदायित्व तथा सामूहिक-जीवन (Community Life) की भावना को लोगों मे भरना होगा।"

हमारे देश मे १००० मे से १५० यानी १५ प्रतिशत लोग ही शिक्षित हैं। इस पन्द्रह प्रतिशत लोगों मे से भी एक बड़ी संख्या सरकारी दफ्तर, डाक, तार, डाक्टरी, स्वास्थ्य, इंजनियरिंग तथा

उसी प्रकार के दूसरे विभागों में कार्य कर रही है। इन लोगों को निकाल देने के पश्चात् कितने और कैसे शिक्षक प्रौढ़-शिक्षा के क्षेत्र में रह जायेंगे यह विचारणीय है। इन लोगों को किस प्रकार ऐसी ट्रेनिंग दी जाय कि ये लोग विश्व-विद्यालय की उच्च डिग्री प्राप्त किये विना ही अधिक से अधिक ज्ञान संचय कर सकें और अपने अर्जित ज्ञान द्वारा देशवासियों को अधिक-से-अधिक लाभ पहुँचा सकें ?

यह अनुमान किया जाता है कि देश की शिक्षा-प्रसार योजना को सफल बनाने के लिए पचास लाख शिक्षकों की आवश्यकता होगी। इस महती समस्या का हल केवल हमारे 'शिक्षकों के कालिजों' द्वारा ही नहीं हो सकता। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे अच्छे स्कूल व कालेजों मे ऐसे विषयों का समावेश हो कि जो देश-निर्माण के कार्य में संलग्न व्यक्तियों को सहायता पहुंचा सकें। इस क्षेत्र में एक वहुत बड़ी संख्या में उन सामाजिक स्वयं-सेवकों, नवयुवकों और राजनैतिक कार्यकर्ताओं का भी सदुपयोग हो सकता है कि जिनको जनता से सम्पर्क में आने का अनुभव तो है, परन्तु अपने इच्छित विषय का ठीक ज्ञान नहीं है अथवा इसके प्रतिपादन करने का ढंग नहीं आता, किन्तु उनका उत्साह उनके इस अभाव को दूर करता है। वे ऐसी संस्थाओं में जाने से नहीं हिचकिचायेंगे कि जहां उनको थोड़े ही समय में अपने इच्छित विषय का ज्ञान अथवा उसके प्रतिपादन व शिक्षण के तरीके सिखाये जा सकें। यही शिक्षा प्राप्त करने का उत्तम मार्ग

है जिससे कि हमारा देश अब तक वंचित है। आज छात्रों का आधा जीवन ऐसे विषय पढ़ने मे व्यतीत हो जाता है कि जिनका प्रयोग करने का सुअवसर शायद उन्हें आजीवन न मिल सके। जीवन-क्षेत्र में प्रवेश करने पर वे तब भी अपने को तैयार नहीं पाते हैं। उनको आप ही इस बात का ज्ञान नहीं होता कि जीवन में किस प्रकार क़दम उठायें। ऐसे लोग प्रौढ़ों को क्या शिक्षा दे सकेंगे कि जो अपनी समस्याओं और शंकाओं के समाधान के लिए वहां आते हैं। कुछ समय तक भारतवर्ष के ग्रामों को अभी बहुत उच्च-शिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है। अभी तो उच्च-शिक्षित ग्राम्य-वासियों की समस्या दूर करने की अपेक्षा स्वयं उनके लिये एक समस्या बन जाते हैं। अतः कोलम्बिया-विश्वविद्यालय के 'टीचर कालिज' के प्रौढ़-मनोविज्ञान के अध्यापक डा० लार्ज (Dr. Lorge) का कथन है कि प्रौढ़ और उसके अध्यापक में बहुत अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये। उनके विचार में वही अच्छा शिक्षक बन सकता है जिसे खुद उन कठिनाइयों का अनुभव हो जो कि उसके छात्रों के सामने उपस्थित हैं। अतएव हमको समाज के भिन्न-भिन्न वर्ग के लोगों को ऊपर उठाने के लिए उसी वर्ग के शिक्षक देने होंगे।

कुछ समय सामाजिक कार्यों को देना (Social Conscription) छात्रों के लिए आवश्यक बना देना तथा 'भारत सेवा समाज' द्वारा देश-निर्माण के कार्यों के लिए स्वयंसेवक भरती करना संभवतः थोड़े दिनों के लिए सार्थक हो सके। परन्तु वह

भी विशेषकर जनता में उत्साह पैदा करने तक तथा उसका ध्यान रचनात्मक कार्यों की ओर आकर्षित करने तक ही सीमित रह सकेगा। यदि वास्तव में हम ऐसे लोगों के कार्य से उचित परिणाम की आशा रखें तो यह आवश्यक हो जाता है कि ये लोग व्यवस्थित रूप से विशेषज्ञों के निरीक्षण में कार्य करें और इनकी शिक्षा व प्रशिक्षण का समुचित प्रबन्ध कार्य-क्षेत्र में (In-Service Training) उनकी सुविधा तथा आवश्यकतानुसार हो।

प्रत्येक कार्य के लिए यह आवश्यक है कि उसका उद्देश्य होना चाहिए और वह उद्देश्य छात्र व शिक्षक दोनों को ही स्पष्ट होना चाहिए। प्रौढ़ों से प्रायः आतंक द्वारा काम नहीं ले सकते। उनके लिए तो सामाजिक व आन्तरिक प्रेरणा ही प्रभावशाली हो सकती है। प्रौढ़-शिक्षा के उद्देश्य प्रौढ़-लोगों के दैनिक-जीवन के कार्यों से ही प्राप्त हो सकते है। उनकी समस्याएं साधारण जिज्ञासा से लेकर नये संसार के अनुभव की इच्छा, अच्छी नौकरी, दूसरे लोगों के साथ व्यवहार का तरीका, किसी कार्य में दक्षता प्राप्त करना तथा वर्तमान सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक समस्याओं पर अपनी सम्मति प्राप्त करना तक हो सकती है। कोई भी शिक्षा बिना कारण के नहीं हो सकती और कारण का सम्बन्ध सर्वदा समस्या से होता है अतएव हमारी शिक्षा हमेशा प्रौढ़ों को समस्याओं से सम्बन्धित होनी चाहिए।

डा० हापकिन की पुस्तक 'इंटर-एक्शन' (Inter-Action) के आधार पर प्रौढ़-शिक्षा के शिक्षकों के लिये शिक्षा चार प्रकार

की होनी चाहिये :—

१. कार्य-कुशलता प्राप्त करना;

२. विषय का ज्ञान प्राप्त करना;

३. प्रौढ़-मनोविज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना;

४. पारस्परिक सहयोग द्वारा कार्य करने की क्षमता प्राप्त करना।

यदि पहले दोनों प्रकार के व तीनों प्रकार के ज्ञान स्कूल व कालिज द्वारा प्राप्त हो भी जायें तब भी व्यवहारिक ज्ञान व कुशलता बिना अनुभवी पाठ्य-क्रम (Experienced curriculum) के सम्भव नहीं। सब से पहले 'हस्तोद्योग द्वारा शिक्षा' (Craft) जो कि 'नई तालीम' अथवा बेसिक एजूकेशन के नाम से प्रसिद्ध है, गांधी जी द्वारा ही प्रतिपादित हुई थी। गांधी जी चाहते थे कि छात्र राष्ट्र पर बोझ न बनकर अपनी शिक्षा का भार स्वयं हाथ के कार्य द्वारा उठा सकें और वही कार्य उनकी शिक्षा का आधार बन जाय।

इसका श्रेय गांधी जी को ही है कि उन्होंने अपने रचनात्मक कार्य-क्रम द्वारा लोगों का ध्यान भारत के ग्रामों व नगरों की अनेक महत्व-पूर्ण समस्याओं की ओर आकर्षित किया। इसके फलस्वरूप सामाजिक व रचनात्मक क्षेत्र मे कई संस्थाये स्थापित हुई तथा काग्रेस व अन्य संस्थाओं व व्यक्तियों द्वारा कई योजनाएं भी चलाई गई। कस्तूरबा व गांधी स्मारक निधि द्वारा एक बहुत बड़ी धनराशि का कोष इन कार्यों के लिए स्थापित किया गया। परन्तु

इनका जितना स्थायी लाभ देश को पहुँचना चाहिये वह कई कारणों से न पहुँच सका।

प्रारम्भ से ही मेरी रुचि प्रौढ़-शिक्षा में रही है। इसके लिए प्रेरणा मुझे गांधी जी के रचनात्मक कार्य से मिली।

अतः सन् १९४७ में देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् यह उत्कण्ठा प्रबल हो उठी कि देखूं किस प्रकार दूसरे देशों ने हमारे जैसी अपनी सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को दूर किया है। उनकी किन बातों को अपनाकर हम अपने देश के पुनर्निर्माण में सहायक हो सकेंगे। इसी ध्येय को लेकर दिसम्बर १९४८ में मैंने संयुक्तराष्ट्र अमरीका और मैक्सिको की यात्रा की।

सौभाग्यवश सब से प्रथम मेरा प्रवेश मेरीलैंड विश्व-विद्यालय में हुआ। यह स्टेट-विश्व-विद्यालय संयुक्त-राष्ट्र अमरीका की राजधानी वाशिंगटन से १० मील दूरी पर स्थित है और कृषि-विभाग तथा शिक्षा-विकास-सेवाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां के विशाल कृषि-अर्थशास्त्र विभाग, पाउल्ट्री-हस्बैंड्री विभाग (Poultry and Husbandry Deptt.), डेयरी विभाग (Dairy Deptt.) तथा गृह अर्थशास्त्र (Home Economics Deptt.) ने बरबस मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। उनकी प्रयोग-शालाओं के महत्व-पूर्ण प्रयोग और उनके ज्ञान को सर्व-साधारण तक पहुंचाने की विधि ने इस बात का निश्चय दिलाया कि इसका श्रेय इन विश्व-विद्यालयों और उनकी विकास-सेवाओं को ही है कि आज संयुक्त-राष्ट्र अमरीका में ग्राम और नगर में कोई विशेष

अन्तर देखने में नहीं आता।

इसके उपरांत न्यूयार्क की विश्व-विख्यात कोलम्बिया-यूनिवर्सिटी में मैंने प्रवेश किया। यहाँ मुझे न्यूयार्क के प्रसिद्ध 'कम्यूनिटी सेंटर' 'सैटिलमैंट-हाउज़', सिटी-कालिज और कोलम्बिया यूनिवर्सिटी की नगर-शिक्षा-विकास सेवाओं के देखने का सुअवसर मिला।

यह इसी का फल था कि मैंने यूनाइटेड-स्टेट्स का पूर्व से पश्चिम तक पर्यटन किया। टी० वी० ए० तथा विश्व-विद्यालय स्टेट-विभाग तथा विशेष संस्थाओं के प्रौढ़-शिक्षा के कार्य-क्रम के साथ ही साथ उनकी शिक्षा-विकास सेवाओं की ओर भी उतना ही ध्यान दिया। प्रत्येक स्टेट की इन शिक्षा-विकास सेवाओं में आपस मे सम्बन्ध और कोई न कोई विशेषता अवश्य दृष्टि गोचर हुई। इनकी यही विभिन्नता इसके कार्य-कर्ताओं में एक नया जोश व उमंग पैदा कर देती है। कोलम्बिया यूनीवर्सिटी के टीचर्ज कालिज में मुझे संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के प्रसिद्ध ग्राम शिक्षा-विशेषज्ञ डा० ब्रूनर (Dr. Brunner) से पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आप भारत सरकार व भारतीय छात्रों द्वारा जो देश की शिक्षा व उन्नति के लिए प्रोग्राम बनाये जा रहें हैं उन्हे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। आपकी सम्मति में वह वास्तविकता की भित्ति पर स्थिर नहीं हैं। आपने यह भी कहा कि—"मैंने भारतीय भ्रमण में सैकड़ों ट्रैक्टरों को ज़ंग लगते देखा। भारत की खाद्य-उत्पादन की समस्या अधिक 'ट्रैक्टर' नहीं है। यदि कोई पुराने हल के फलवे

को इतना बढ़ा दे कि वह दो इंच अधिक गहरी जमीन खोद सके तो वह छोटे-छोटे टुकड़ों पर खेती करने वाले लाखों किसानों को लाभ पहुँचाने के साथ देश की खाद्य स्थिति में वास्तविक लाभ पहुँचा सकेंगे।" 'इण्डियन यूनीवर्सिटी कमीशन' के प्रधान डा० आर्थर मोरगान (Dr. Arthur Morgan) से मेरी न्यूयार्क में भेंट हुई थी और मुझे उनके साथ 'एंटियाक' कालिज, येलो स्प्रिंग (Antioch College Yellow Spring) में जाने तथा वहां उनके कालिज में अतिथि बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपका कथन था कि भारत में सच्ची शिक्षा के प्रसार के लिए यह अति आवश्यक है कि वहां ग्राम-विश्व-विद्यालय खोले जायें और उनमें छात्रों को हस्तोद्योग द्वारा शिक्षा दी जाय। इन विश्व-विद्यालयों को अपने प्रदेश (State) के विशेष हस्तोद्योग को चुनने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए और वे अपनी ग्राम-शिक्षा-विकास योजना द्वारा उनको दूर स्थित ग्रामों में भी पहुँच सकें।

हर्ष का विषय है कि हमारी 'पंच-वर्षीय-योजना' में न केवल ग्राम-शिक्षा-विकास की महत्ता को स्वीकार किया गया है वरन् उन्होंने 'कम्यूनिटी ऑर्गेनाइजेशन' (Community Organisation) को अपना तरीका' तथा 'एक्सटैंशन-सर्विस' (Extension Service) की संस्था को राष्ट्र निर्माण के लिये अपनाया है।

वास्तव में विकास सेवाओं मे यह एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि ये प्रत्येक संस्कृति के ढांचे के अनुरूप ही अपने को ढाल

सकती हैं तथा लोगों की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप ही इनमे बढ़ने की क्षमता है। इसकी व्यवस्था तथा तरीकों मे ही एकरूपता पाई जाती है अन्यथा प्रत्येक प्रदेश मे लोग अपनी-अपनी आवश्यकताओं और समस्याओं पर महत्व देकर अपने उद्देश्य-पूर्ति की ओर आकर्षण पैदा करते है। प्रो० ब्रूनर व यांग ने अपनी 'रूरल-एक्सटैंशन सरविसिज इन अमरीका' नामक पुस्तक में कहा है कि एक्सटैशन की नीति, कार्यक्रम तथा ढंगों की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि जिस देश व प्रदेश में यह काम में लाई जाये उस देश व प्रदेश के सास्कृतिक ढांचे के अनुरूप ही पहले उन्हे ढाल लिया जावे।

इसके अलावा इन विकास-सेवाओं में दूसरी संस्थाओं और स्वयंसेवकों के सहयोग द्वारा कार्य करने की क्षमता भी प्रशंसनीय है। हमारे देश में वर्तमान शिक्षा-पद्धति की इतनी कटु-आलोचना के बाद भी कोई तबदीली दृष्टि-गोचर नहीं होती। यदि हमे अपनी 'पंचवर्षीय योजना' को सफल बनाना है तो यह आवश्यक है कि हम अपने विश्व-विद्यालयों और अन्य शिक्षा-केन्द्रों मे शिक्षा-विकास सेवाओं तथा प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था करें, तथा उनमे लोगों को 'पारस्परिक व्यवहार' 'सहयोगी शिक्षा' 'प्रौढ़-मनोविज्ञान' और 'वाद-विवाद' की रीति बताने का प्रवन्ध करें। इसके अलावा यदि हमे लोगों को जीवन की वास्तविक शिक्षा देनी है और आम जनता तक इस सुअवसर को पहुँचाना है, तब हमें प्रौढ़-शिक्षा-विकास योजना द्वारा सरकार व जनता के परस्पर

सहयोग से नगर और ग्राम की विषमता को दूर करना होगा, और इसके लिए हमें अमरीका की कृषि तथा गृह अर्थशास्त्र शिक्षा-विकास के सहयोग द्वारा कार्य करने के ढंग को अपनाना होगा । इसी कारण इस पुस्तक में इन सेवाओं को प्रधानता दी गई है।

जनता के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि हमारे विश्व-विद्यालय अपने उत्तरदायित्व को पूरी तरह समझें और अपने द्वार प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिये खोलकर उनके सच्चे मित्र व सहायक बनें।

पन्द्रह वष राजनैतिक, रचनात्मक व शिक्षा-क्षेत्र में कार्य करने के पश्चात् मैंने यह अनुभव किया है कि हमारी बहुत सी योजनाओं की असफलता का मुख्य कारण रुपये का अभाव ही न होकर बहुत कुछ हम लोगों में सहयोग द्वारा सुसंगठित, सुचारु तथा वैज्ञानिक रूप से किसी कार्य को चलाने के ज्ञान की कमी है। यदि किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित रूप से चलाया जाय तो अवश्य ही व्यक्तियों और संस्थाओं के परिश्रम, समय और धन की बहुत कुछ बचत हो सकती है।

किन्तु इसके लिए यह परमावश्यक है कि कार्य-कर्ताओं और उनके नेताओं की 'ट्रेनिंग' के लिए विश्व-विद्यालय तथा अन्य शिक्षा-सम्बन्धी संस्थाएं इस कार्य को अपने हाथों में लें तथा जनता से सम्पर्क रखने तथा उसकी मांग अपनाने की भावना को शिक्षा संस्थाओं में जागृत करें। इसी के द्वारा हमारी सरकार पंच-वर्षीय

योजना को भी सफल बना सकेगी और औद्योगीकरण से आने वाली उन समस्याओं से जो, लोगों के जीवन मे अशान्ति उत्पन्न कर देती हैं, रक्षा कर सकेगी। किन्तु मेरा उद्देश्य यह नहीं है कि हम इनका अन्धानुसरण करें, किन्तु जैसे मैंने पहले कहा कि हमे भारतीय आवश्यकताओं तथा अपने साधन व सामग्री के अनुसार ही उन्हें स्वदेशी सांचे मे ढालना होगा, तभी हम सफल हो सकेगे। इन विषयों और संस्थाओं को चुनने का मेरा उद्देश्य अपने देशवासियों-का ध्यान उनकी उत्तम व्यवस्था, सहयोग की भावना तथा सफलता की ओर आकर्षित करने का ही है। इसके अलावा यह पुस्तक प्रौढ़-शिक्षा के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालती है। वास्तव में यह उन लेखों का संग्रह है जो समय-समय पर 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 'विश्वदर्शन', 'न्यूज़ क्रानिकल' व 'राजधानी' में निकलते रहे है। ये विषय मेरे अपने अनुभव के आधार पर ही चुने गये है। मुझे पूर्ण आशा है कि सामाजिक क्षेत्र से सम्बन्धित सभी प्रकार के लोग इनसे लाभ उठा सकेंगे।

११, बावर लेन,
नई दिल्ली।

उर्मिला जौहरी

विश्व-विद्यालयों की नगर तथा ग्राम-शिक्षा-विकास-सेवाएं

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की प्रौढ़-शिक्षा प्रसार में वहा के विश्व-विद्यालयों, कॉलेजों तथा अन्य संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वार प्रत्येक प्रौढ़ व्यक्ति के लिये चाहे वह किसी भी वर्ग अथवा अवस्था का हो सर्वदा खुले रहते है। उनका उद्देश्य अपनी शिक्षा-विकास योजना द्वारा सामूहिक तथा व्यक्तिगत रूप से लोगों की समस्याओं को हल करके उनकी सेवा करना है। ये शिक्षा-विकास सेवाएं विशेष कर उन छात्रों के लिए हैं जो जीविकोपार्जन में व्यस्त होने के कारण पूरा समय शिक्षा के लिए देने में असमर्थ हैं परन्तु अपने व्यक्तिगत विकास अथवा आथिक उन्नति के लिए सुअवसर चाहते हैं। इनके अलावा वे छात्र भी, जो अपने माता-पिता तथा अभिभावकों पर अपनी शिक्षा का भार नहीं डालना चाहते, इनसे पूरा लाभ उठाते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका में स्कूल जीवन से ही इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ जीविकोपार्जन में भी कुछ समय अवश्य लगाना चाहिये। 'कमाओ और पढ़ो' का वहां की शिक्षा-प्रणाली मे एक विशेष स्थान है। इसी कारण से वहां की शिक्षा-पद्धति तथा पाठ्यक्रम सर्वथा लोगों की सच्ची

आवश्यकताओं के आधार पर स्थित और उनके वास्तविक जीवन मे सहायक होता है। जीवन से सम्बन्धित कोई भी विषय कुछ छात्रों की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए ही पाठ्य-क्रम का विषय बन जाता है। यही कारण है कि वहां छात्रों मे अदम्य उत्साह व आत्म-विश्वास का संचार होता है जबकि भारतीय छात्र विश्व-विद्यालय से बाहर आकर अपने को नये संसार में पाते हैं और साथ ही अपने में पाते हैं आत्म-विश्वास का अभाव। फल-स्वरूप आज राष्ट्र-जीवन मे हम जिस आत्म-विश्वास के साथ प्रगति करना चाहते हैं वह नहीं कर पाते।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका के प्रत्येक प्रदेश में एक 'स्टेट-यूनीवर्सिटी' होती है। इस विश्व-विद्यालय का शुल्क जनसाधारण के लाभार्थ दूसरे विश्व-विद्यालयों से कम रखा जाता है। इसके दो विभाग होते हैं—एक नगर-निवासियों के हित के लिए तथा दूसरा ग्राम-वासियों के लाभार्थ। यहा प्रातः आठ बजे से रात्रि के दस बजे तक शिक्षा का कार्यक्रम चलता रहता है। परन्तु शाम के चार बजे से रात्रि के दस बजे तक की कक्षाओं में 'प्रौढ़-शिक्षा' का विशेष आयोजन रहता है। ये कक्षायें विश्व-विद्यालय की शिक्षा-विकास सेवाओं के अन्तर्गत चलती हैं। इनमें अधिकतर आफिसों तथा दूसरे पेशों वाले अनुभवी तथा बड़ी उमर वाले लोग ही सम्मिलित होते हैं। इनमे 'नागरिक-शिक्षा' का विशेष स्थान होता है। इस प्रकार की शिक्षा का आयोजन वहा के अन्य विश्व-विद्यालयों, कॉलिजों और शिक्षा-सम्बन्धी संस्थाओं में भी

होता है। परन्तु 'कृषि-अर्थ-शास्त्र विभाग' तथा ग्रामों में फैली हुई उसकी सेवायें अधिकतर स्टेट-विश्व-विद्यालयों की ही अपनी विशेषता है।

सरकारी विश्व-विद्यालयों की ग्राम्य-शिक्षा-विकास सेवाएं अमरीका में 'सहयोगी कृषि तथा गृह-अर्थशास्त्र विकास सेवा' (Co-operative Agriculture and Home Economics Extension Service) के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये सहयोगी कृषि-विकास सेवाएं संसार भर में कर द्वारा चालित (Tax-supported) सब से बड़ी प्रौढ़-शिक्षा की संस्थाएं हैं। ये सेवाएं संयुक्तराष्ट्र अमरीका के कृषि-विभाग, लैंड ग्रॉट कॉलेजों, और ज़िले की सरकारों तथा कहीं-कहीं किसानों की स्वयं चलाई हुई संस्थाओं के सहयोग में कार्य करती हैं। कितने ही प्रदेशों में इनके कार्यकर्ताओं का वेतन प्रदेशीय और केन्द्रीय सरकार के कोश द्वारा और कार्यालय तथा भ्रमण का व्यय ज़िले की सरकार द्वारा वहन किया जाता है। प्रदेश के संचालक का इनकी व्यवस्था में मुख्य स्थान है। इनकी व्यवस्था के अन्तर्गत ही सूबे के कृषि तथा गृहप्रदर्शन के कार्यकर्ता तथा फोर० एच० क्लब के नेता और सूबे के दूसरे कार्य-कर्ता काम करते हैं। ज़िले के कार्य-कर्ताओं तथा प्रदेश के छोटे विभागों में काम करने वाले विशेषज्ञों का उत्तरदायित्व 'स्टेट' पर है। परन्तु ये सब सरकारी विश्व-विद्यालय अथवा कॉलिज के सदस्य माने जाते हैं। १९४० में २९५२ तहसीलों में २९५३ कृषि तथा उतने ही गृह-निर्माण के

कार्य-कर्ता, ३०० से भी अधिक फोर० एच० क्लबों तथा प्रौढ़-सभाओं और ग्राम-संस्थाओं के कर्मचारी कार्य कर रहे थे। इसके अतिरिक्त १२०० सहायक कार्यकर्ता, २७० नीग्रो काउंटी एजेंट, २३० नीग्रो गृह-प्रदर्शनकर्ता और एक बड़ी भारी संख्या स्वयं-सेवकों की इसमें भाग लेती रही है। सीधे कार्य-क्षेत्र से सम्बन्धित कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त इन सेवाओं में अन्य लोग भी काम करते हैं। इनमें से अधिकतर कृषि-गृह-निर्माण तथा ग्राम्य-जीवन के किसी न किसी विभाग के विशेषज्ञ हैं। इनका कार्य स्थानीय कार्यकर्ताओं की सहायता करना तथा प्रदेशों में भ्रमण करके सभाओं और प्रदर्शनों का आयोजन करना है। इसके साथ ही ये स्थानीय नेताओं को ट्रेनिंग भी देते हैं। इस कार्य में ६००० से भी अधिक शिक्षक सम्मिलित हैं ।

ये शिक्षा-सम्बन्धी सेवाएं एक करोड़ से भी अधिक क्षेत्रफल में (जिसमें ५५ लाख खेत और हजारों ग्राम शामिल है) फैली हुई हैं। २ करोड़ ७५ लाख से भी अधिक कृषक और अन्य ग्रामीण तथा १ करोड़ ५० लाख परिवार इसकी सेवाओं के अधिकारी हैं। इनमें से कम से कम ७५ प्रतिशत को उन सेवाओं से अवश्य लाभ पहुंचता है। केन्द्रीय सेवाओं का उद्देश्य ग्रामीण लोगों को कृषि-गृह-परिवार तथा सामुदायिक जीवन के नित्यप्रति के कार्यों में नूतन वैज्ञानिक अनुसन्धानों का प्रयोग सिखाना है।

मेरीलैंड यूनिवर्सिटी के कृषि अर्थशास्त्र के सहायक प्रो० हैमिल्टन के साथ मुझे मेरीलैंड तथा वरजिनिया स्टेटों के ग्रामों
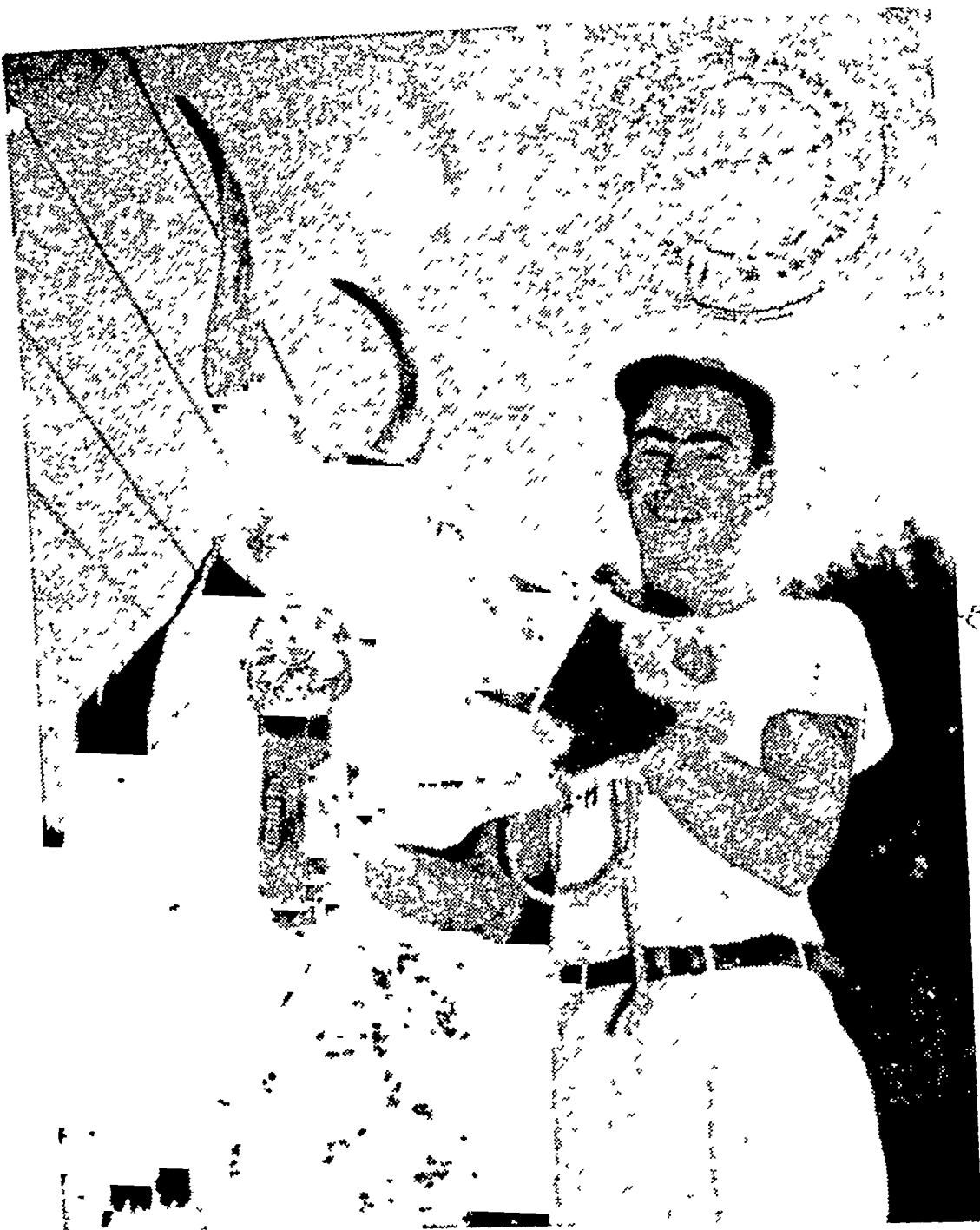
एक नवयुवक किसान मवेशियों की प्रदर्शनी में अपनी गाय का प्रदर्शन बड़े गर्व से कर रहा है।
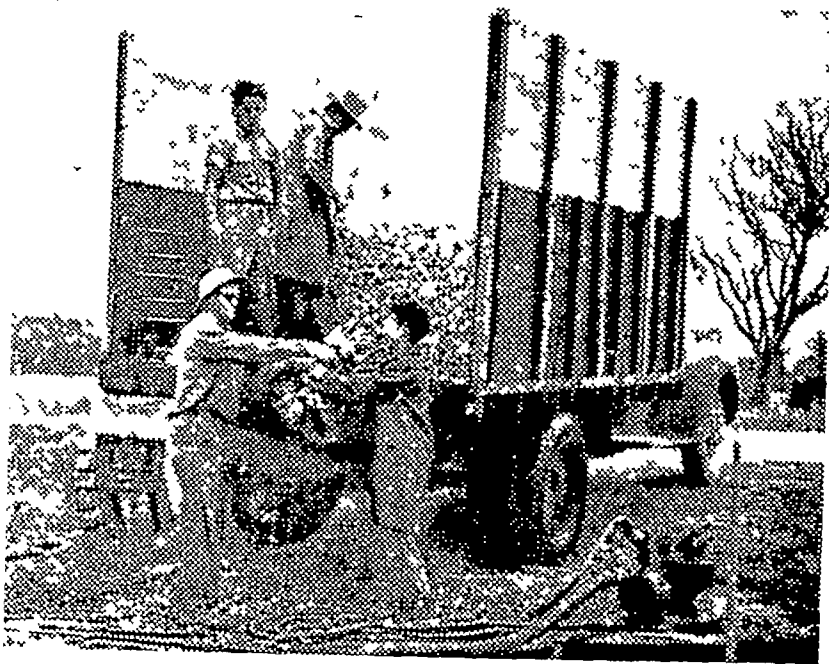
एक कृषक परिवार ट्रक में सब्जियां भरकर प्रदर्शन को ले जा रहा है।

में भ्रमण तथा शिक्षा-विकास सेवाओं की व्यवस्था तथा कार्यक्रम को पास से देखने का सुअवसर मिला। वहां मैंने मांस के उत्पादन की व्यवस्था देखी। मुर्गी, सूअर, गाय पालने वालों के खेत, 'चिकन फार्म', 'पिग फार्म' तथा 'मीट फार्म' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा दुग्धालय (डेयरी-फार्म) तथा गेहूँ और मक्का आदि के फार्म भी देखे। गृह-निर्माताओं के सुन्दर कार्यक्रम को देखने का सुअवसर मुझे दक्षिण में भी मिला। सब से पहले इनका परिचय मेरीलैंड स्टेट में ही हुआ था। इनका यह गृह-शिक्षा का कार्य तथा कृषि-शिक्षा दोनों ही संयुक्तराष्ट्र अमरीका की कोऑ-परेटिव एक्स्टैंशन सर्विस के विभाग हैं। गृह-निर्माण-शिक्षा का संचालन स्टेट यूनीवर्सिटी के गृह-अर्थशास्त्र विभाग (Home Ecomoimcs Deptt.) के अन्तर्गत होता है। संयुक्तराष्ट्र के पर्यटन में दक्षिण में मुझे बोलने के भी कई निमंत्रण मिले और वहां के नीग्रो किसानों के घर देखने का अवसर भी मिला। यहां मेरा इनके विस्तृत तथा विशाल कार्यक्रम से वास्तविक परिचय हुआ। नूतन आविष्कारों के प्रयोग के अलावा ये लोग घर बनाने, बगीचा व सब्जियों के खेत (Kitchen Garden) तथा आचार, मुरब्बा डालने की विधियां आदि भी सीखते हैं। इससे अधिक इनके कार्यों की क्या प्रशंसा हो सकती है कि एक नीग्रो स्त्री ने मुझसे कहा, "जो कुछ भी आप हमारे घर में आज देखती हैं उस सब का श्रेय हमारे गृह-प्रदर्शनकर्ताओं को है।"

कार्यकर्ताओं की कठिनाइयों का कुछ आभास मुझे मेरीलैंड के

'पाउल्ट्री व हस्बैंड्री' की शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ भारतीय छात्रों द्वारा हुआ । उन्होंने मुझसे कहा, "किसान और स्त्रियों का स्वभाव सारे संसार में एकसा होता है।" इससे पहले कि मैं उनके इस कथन की सत्यता की जांच करती वहां के एक प्रोफेसर ने भी इसका अनुमोदन किया । उन्होंने कहा, "आपको मालूम नहीं कि अमरीका के किसान कितने ज़िद्दी आदमी हैं । वे किसी भी वस्तु को अपनी आखों से देखे बिना विश्वास नहीं करते ।" वास्तव मे नवयुवक किसानों को समझाना पड़ता है और उनसे सहयोग की याचना करनी पड़ती है जिससे कि वे अपना खेत प्रदर्शन-कर्ता को सौंप दें और प्रदर्शन-कर्ता खेती के नये आविष्कारों का क्षेत्र पर प्रयोग कराके उसके गुण दूसरे किसानों को बता सके । वे उस नवयुवक किसान की नये ढंग से खेती करने में सहायता करते हैं। फसल पकने पर प्रदर्शन-कर्ता अन्य किसानों के घर जाता है और उनको बढ़िया फसल और प्रति एकड़ उपज बढ़ने की वार्ता सुनाता है। किसान इसके कथन पर विश्वास नहीं करता, किन्तु तब भी चोरी (छिपकर) से अपनी उत्सुकता मिटाने के लिए प्रदर्शन-क्षेत्र देखने पहुंचता है । प्रदर्शन-कर्ता किसान के मना करने प्रर भी प्रदर्शन-क्षेत्र का पता पहले ही उसके पास छोड़ जाता है। कभी-कभी किसान खेत के पास से अपनी मोटर में गुज़रता है और यह बहाना करता है कि किसी कार्यवश उधर से गुज़र रहा था। परन्तु जब उसे प्रदर्शन-कर्ता की सत्यता पर विश्वास आजाता है तो वह गाड़ी से उतरकर खेत के मालिक

से बात करता है और पूछता है कि उसकी फसल इस बार इतनी अच्छी किस प्रकार हुई। इस प्रकार से यह समाचार आसपास के गांवों और समुदायों में पहुँचता है और एक बड़ी संख्या में अन्य किसान 'प्रदर्शन-क्षेत्र' देखने आने लगते हैं। इस प्रकार से प्रदर्शन-कर्ता के प्रदर्शन का कार्य हलका होजाता है। प्रारम्भ में पैर जमाना कठिन होता है परन्तु अन्त में सबर और परिश्रम का फल अवश्य मिलता है। यह बात कई बार प्रदर्शन-कर्ताओं ने मुझसे दोहराई।

वास्तव में विश्व-विद्यालयों की इन, सेवाओं का यह सुन्दर मिश्रण तथा शिक्षा-क्रम कालेजो तक ही सीमित नहीं है, वरन विश्व-विद्यालयों की प्रयोग-शालाओं का भी इनमें महत्वपूर्ण भाग है। ऐतिहासिक दृष्टि-कोण से 'लैंड-ग्रांट कालिज' अथवा 'कृषि व इंजीनियरिंग कालिजों' (Agriculture and Engineering Colleges) की स्थापना १८६२ के 'मौरिल-एक्ट' (Morril Act) द्वारा हुई। तत्पश्चात् इन कालिजों को केन्द्र द्वारा जमीनों की सहायता मिली। इन सहयोगी विकास सेवाओं के लिए १९१४ के 'स्मिथ लिवर बिल' (Smith Lever Bill) में स्थान रखा गया था। परन्तु इसकी महत्वपूर्ण पुष्टि 'स्मिथ-हफ एक्ट' द्वारा हुई। इस 'एक्ट' के द्वारा ही कृषि, गृह-अर्थशास्त्र, औद्योगिक कलाएं और माध्यमिक शिक्षा की सहायता के लिए केन्द्र के द्वार खुले। इस 'एक्ट' के अन्तर्गत काम करने वाले सभी अध्यापक शिक्षा-विकास कार्य-क्रम में भाग लेते है। इनके कार्य के कुछ प्रमुख क्षेत्र 'स्थानीय 'फोर. एच. क्लब', अमरीका के भविष्य के

किसान (Future Farmers of America) तथा गृह-सम्बन्धी योजनाएं हैं। अपनी विस्तृत तथा विभिन्न सेवाओं द्वारा ये प्रौढ़-शिक्षा में महत्व-पूर्ण योग देते हैं। उनके कार्य-क्रमों का उद्देश्य —

१, उत्तरोत्तर कृषक के पारिवारिक और किसानी जीवन-क्षेत्र के स्तर को ऊंचा उठाना।

२. ग्रामीण नेताओं के प्रशिक्षण का प्रबंध करना।

३. ग्रामीण लोगों की मानसिक, सामाजिक और मनोरंजन की वृद्धि के लिए साधनों का आयोजन करना।

४. ग्रामीण बालक-बालिकाओं में ग्राम्य जीवन को समझने की शक्ति की अभिवृद्धि करना।

५. इस प्रकार उत्तरोत्तर उत्तम खेती तथा अच्छे साधनों के प्रयोग द्वारा तथा धन देकर गृह, खेत और जीवन मे सुधार द्वारा कृषक परिवारों की आय में वृद्धि करना।

६. कृषि को राष्ट्र जीवन में स्थान से परिचित करना।

७. जनता और राष्ट्र का ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित ज्ञान से परिचय कराना और इस ज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि करना।

८. ग्रामीण लोगों की सामाजिक और आध्यात्मिक-जीवन की उन्नति करना।

डाक्टर ब्रूनर इस बात पर जोर देते हैं कि "यह शिक्षा का एक ढंग या तरीक़ा (Process) है कोई प्रणाली नहीं।" जब कि यूनैस्को के भूतपूर्व डायरैक्टर डा० विलसन समझते है कि

नवयुवक 'बेकरी' का काम सीख रहे हे ।

मिट्टी के खिलौने बनाते हुए, बालको का मनोरंजन और शिक्षा साथ साथ हो रहे हैं।

वास्तव मे "यह ऐसा कार्यक्रम है कि जिससे श्रेष्ठ घर, श्रेष्ठ खेत तथा श्रेष्ठ खाना व कपड़ा पहुँचा कर राष्ट्र को सुदृढ़ बनाया जा सके।" संयुक्त राष्ट्र मे इन सेवाओं का क्षेत्र दिन-प्रति-दिन विशाल होता जा रहा है। आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक सभी प्रकार की शिक्षा को इन्होंने अपने अन्तर्गत कर लिया है। सभी शिक्षा-संस्थाएं बालक, बूढ़े, प्रौढ़ व युवा जनों को परामर्श देना तथा उनकी उचित शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना अपना कर्तव्य समझने लगी है। ये ऐसे-भिन्न-भिन्न मार्ग ग्रहण करती हैं कि इनके उत्साह और महान प्रयास को देखकर आश्चर्यान्वित हो जाना पड़ता है। ये इस बात को बहुत अच्छी प्रकार समझती हैं कि 'प्रत्येक सार्वजनिक संस्था बहु-संख्यक लोगों की जमात है कुछ लोगों की नहीं। उन सबको सीखने का सुअवसर मिलना चाहिए जो सीखना चाहते है।'

जार्ज जेहमर (George Zehmer), जो कि वरजिनिया विश्व-विद्यालय (Virginia University) के शिक्षा-विकास विभाग के डायरेक्टर हैं, इस सम्बन्ध में कहते हैं, "यह ऐसे लोगों के विश्वास का प्रतिफल है कि जो चाहते थे कि ऐसे-ऐसे नये मार्ग खोजे जाने चाहियें तथा उनका विकास और उन्नति होनी चाहिये जिससे कि स्त्री व पुरुष दोनों को समान सुअवसर प्रदान हो सके और उनमें जीवन के प्रति नव आशा का संचार हो।" वास्तव में इन सेवाओं का मुख्य उद्देश्य उन लोगों को शिक्षा का अवसर देना है जो किसी भी कारणवश नियमित रूप

से विश्व-विद्यालय, कॉलिज व स्कूल में प्रवेश नहीं कर पाते।

ऐतिहासिक रूप से यह समझा जा सकता है कि ये विकास सेवाएं पिछड़े देशों की प्रौढ़-शिक्षा में बढ़ती दिलचस्पी का एक अंग हैं। विशेष कर उन राष्ट्रों के लिए तो ये अनिवार्य हैं कि जिन्होंने प्रजातंत्रवाद को अपनाया है और औद्योगीकरण की ओर तीव्र-गति से अग्रसर हो रहे हैं। औद्योगीकरण (Industrilisation) और अक्षर-ज्ञान का बहुत निकटतम सम्बन्ध है। नैशनल यूनिवर्सिटी एक्सटैंशन के सैक्रेट्री तथा कोषाध्यक्ष वाल्टर. एस. बिटनर (Walter S. Bittner) के मतानुसार पुरानी वस्तु में नवजीवन संचार करने तथा किसी वस्तु के अभाव की पूर्ति करने का उत्तरदायित्व विश्व-विद्यालयों पर ही है। वे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ये शिक्षा-विस्तार सेवायें चहार-दीवारी तक सीमित न रहकर मनुष्य के जीवन में स्वाभाविक संचालन-शक्ति का संचार करें।

सन् १६१५ में नेशनल यूनीवर्सिटी एसोसिएशन द्वारा इन विकास-सेवाओं (Extension Services) की स्थापना हुई थी। उस समय तक प्रदेशीय सरकारी विश्व-विद्यालय ही इसके सदस्य थे। परन्तु १६४४ मे ग़ैर सरकारी विश्व-विद्यालय और कालिज मिलाकर सदस्यता की संख्या ४३१ तक पहुंच गई। ये विकास सेवायें कॉलिज से बाहर के लोगों के लिये पाठ्य-क्रम की व्यवस्था करती हैं और उनकी आवश्यकताएं ही पाठ्य-विषय बन जाती है। बहुत सी संस्थाओं की शाखाएं जैसे शाम के

स्कूल, चांदनी रात के स्कूल व शहर के कॉलिज (Down-town Center)। परन्तु सबसे नूतन अभिवृद्धि स्थानीय केन्द्रों की है जो कि 'रैजिडैंट सैंटर्ज़' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें छात्रों की संख्या लाखों तक पहुंचती है। चिट्ठी-पत्री द्वारा शिक्षा के अतिरिक्त इनके कुछ मुख्य और प्रसिद्ध कार्य निम्न लिखित हैं:—

छोटे-छोटे प्रशिक्षण के विषय, व्याख्यान, सम्मेलन, प्रदर्शन, प्रदर्शनियां, वाद-विवाद, अन्वेषण तथा पुस्तकों की छपाई। ये संस्थायें रात्रि के स्कूल, पुस्तकालय, अजायब-घर, व्यापार-संघ, कार्यकर्ताओं के संगठन, स्त्री-सभा, सहयोगी और व्यापारिक सगठन भी चलाती हैं।

इन कक्षाओं मे जो शिक्षा दी जाती है उससे विश्व-विद्यालय की डिग्री तक प्राप्त हो सकती है। कुछ विषय जिनकी शिक्षा इनमें दी जाती है इस प्रकार है:—

१. विश्व-विद्यालय सम्बन्धी कला और विज्ञान के विषय।

२. व्यापारिक और व्यवहारिक विषय।

३. यन्त्रशास्त्र तथा औद्योगिक विषय।

मनोविज्ञान, पारिवारिक सम्बन्ध तथा समुदाय-व्यवस्था के बहुत से पहलू (जैसे स्वास्थ्य, नागरिक-शिक्षा, आर्थिक और अन्य सामाजिक समस्याएं) विषय सूची में सम्मिलित कर लिए गये हैं। कोई भी विषय जिसका समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध है इसके अन्तर्गत आजाता है।

इस प्रकार से संयुक्त राष्ट्र अमरीका के शिक्षक और शिक्षा-संस्थायें अपनी विकास सेवाओं द्वारा जनता की सेवा और राष्ट्र निर्माण में संलग्न रहते हैं। वास्तव में उनका राष्ट्र-निर्माण का यह ढंग अनुकरणीय है ।

गृह-निर्मात्रियों का सम्मेलन

१६४६ का जून मास था। अमरीका के मैरीलैण्ड विश्व-विद्यालय में एक मास का अवकाश हो चुका था। मैं अपने कमरे में बैठी थी। एकाएक बाहर की घंटी बजी। दरवाजा खोलने पर कृषि-अर्थ-शास्त्र के सहायक प्रोफैसर हैमिल्टन ने कमरे में प्रवेश किया और कहा—"श्रीमती जौहरी, आपको आज मैं विश्व-विद्यालय आने का बुलावा देने आया हूँ। आज हमारे राज्य की ग्रामीण गृहिणियाँ एक सप्ताह के लिए ट्रेनिंग लेने आ रही हैं। वास्तव मे यह उनका वार्षिक सम्मेलन है। कार्यक्रम की कापी निशान लगाकर छोड़े जाता हूं। और लोगों को भी मैंने हिदायत कर दी है कि वे लोग आपको प्रत्येक विभाग देखने की हर प्रकार की सुविधा दें। अतः मेरे वहाँ अनुपस्थित होने पर भी आपको कोई असुविधा न होगी। अवश्य आइए, अनूठा दृश्य होगा।"

उनके चले जाने के बाद मैंने सोचा कि चलूं आज दोपहर का भोजन कालेज के पास के होटल में ही प्राप्त करूं और देखूं वहाँ क्या हो रहा है? वास्तव में दृश्य अनोखा था। अजीब समारोह था! बूढ़ी, अधेड़ तथा युवती स्त्रियाँ हाथों में छतरी और सूटकेस लिए बसों और मोटरों से उतर रही थीं। बूढ़ी स्त्रियों में भी वही उल्लास था जो कि प्रथम कालेज-प्रवेश के समय किसी नवयुवक छात्र या छात्रा में होता है। बाद में प्रो० हैमिल्टन ने

बताया कि अमरीका के लोगों का विचार है कि संसार मे सब स्त्री-पुरुषों को तो छुट्टी मिलती है परन्तु गृहस्थ स्त्रियाँ प्रातः से लेकर रात्रि तक कभी आराम नहीं करतीं, अतः उन्हे कुछ अवकाश देने के उद्देश्य से ही इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

कार्यक्रम

इस सप्ताह की शिक्षा का आयोजन विश्वविद्यालय के आधार पर ही किया गया। इसमें घर और समाज से सम्बन्धित इन-इन विषयों पर रोचक व्याख्यान रखे गए—वक्तृता तथा वैयक्तिक विकास, भोजन और जीवनतत्व, घर की सजावट, वेशभूषा, गृहजीवन, गृहकला, आधुनिक-शिल्पकारी, बाग-बगीचा, गृह-निर्माण व रेडियो, बातचीत का ढंग, गायन और वाद्य, अच्छी अंग्रेजी से सफलता तथा पार्लियामेंट और कानून।

इस सप्ताह भर ये स्त्रियाँ घर, बच्चों और पति के उत्तरदायित्व से सर्वथा मुक्त रहती हैं। इनके आमोद-प्रमोद का विशेष आयोजन किया जाता है। इन्हे वाशिंगटन (अमरीका की राजधानी, जो मेरीलैण्ड से दस-बारह मील पर स्थित है) तथा आसपास के और भी सुन्दर तथा ऐतिहासिक स्थान दिखाए जाते हैं।

करीब ७००-८०० स्त्रियाँ कालिज के भव्य भवन में एकत्र थीं। भवन अन्तर्राष्ट्रीय झंडों तथा फूल-पत्तों से अति सुन्दरता से सजाया गया था। मंच पर माननीय व्यक्ति तथा वक्ता बैठे थे। सब से पहले कालेज के सभापति ने उनके स्वागत में भाषण

संगीत-विशेषज्ञ छात्रायें संगीत द्वारा गृह-निर्मात्रियों का मनोरंजन कर रही हैं।

गृहिणिया अवकाश के समय स्कूल मे बुनाई सीख रही हैं।

किया। उसके बाद मेरीलैंड सीनेट के सदस्य ने उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का दिग्दर्शन कराया।

सप्ताह के अन्त में विशेषरूप से इनके लिए दीक्षान्त समारोह किया गया, जिसमें उन्होंने स्नातिकाओं के-से काले चोगे पहन कर प्रमाणपत्र प्राप्त किए। यह सब ठीक उसी प्रकार हुआ जैसे किसी भी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में होता है। इस अवसर को पूर्ण गौरव एवं महत्व प्रदान किया गया। समाचार-पत्रों में तस्वीरें छपीं तथा सिनेमाघरों में चलचित्र दिखाए गए।

इसके पश्चात् मुझे प्रो० हैमिल्टन के साथ मेरीलैण्ड राज्य के गृहनिर्माता सम्मेलनों मे शामिल होने तथा भारत के गृहस्थ जीवन स्त्रियों की प्रगति और त्योहारों पर बोलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इन सभाओं में स्त्रियों की संख्या १०० से ५०० तक होती थी जो कि अमरीका के लिए बड़ी बात समझी जाती है।

एक सम्मेलन में स्त्रियों ने मिलकर सुन्दर भजन गाए, अपने सूबे के गृहनिर्माता क्लब की प्रगति की रिपोर्ट पढ़ी, फिर सभापति तथा अन्य लोगों के भाषण हुए। दोपहर को अपने हाथों से बनाया भोजन सब ने मिलकर खाया। खाना अति स्वादिष्ट बना था तथा बड़ी उत्तमता से परोसा गया था। मेजों को हरे रंग के मेजपोशों तथा हरे और सफेद फूलों के गुलदस्तों से सजाया गया था। बाद में हरे रंग की 'जेली' मिष्टान्न की जगह परोसी गई थी। भोजन समाप्त होने के बाद दूसरी बैठक हुई। इसमें मुझसे हिन्दुस्तानी त्योहारों पर बोलने को कहा गया। भाषण उन्होंने

बहुत दिलचस्पी से सुना। उन्होंने यह भी कहा कि महात्मा गांधी की मृत्यु के समाचार को उन्होंने बहुत शोक से सुना था और उनकी मृत्यु का उन्हे उतना ही दु:ख हुआ जितना कि प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट की मृत्यु से । एक मेज पर भारत की दस्तकारी की चीजें (जो मैं अपने साथ ले गई थी) सजाई गई थीं । उन्होंने बुद्ध की मूर्ति के कमल तथा सरस्वती के चार हाथ, हंस और वीणा के महत्व को पूछा । बनारसी साड़ी और चूड़ियां सब को बहुत ही पसन्द आई। कई तो चूड़ियां मंगाने का आर्डर देने को भी प्रस्तुत थीं। प्रश्नोत्तर के समय जो प्रश्न पूछे गए उनसे स्पष्ट विदित था कि ये स्त्रियां नियमित रूप से दैनिक समाचार-पत्र पढ़ती हैं तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की कार्रवाइयों में विशेष दिलचस्पी लेती हैं।

गृह-निर्मात्री संस्था

ग्रामीण गृहिणियों की सख्या 'होममेकर' (गृहनिर्मात्रियों) के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत-से राज्यों में इन सम्मेलनों के व्यय का भार केन्द्रीय सरकार और प्रांतीय सरकार वहन करती हैं तथा कर्मचारियों और कार्यकर्त्ताओं के भ्रमण का व्यय सूबे की सरकार खुद उठाती हैं।

गृह-अर्थशास्त्र इसका एक महत्व पूर्ण विभाग होता है। 'होम-मेकर' विभाग इसी के अन्तर्गत है,जो उपयुक्त भोजन, आचार-मुरब्बे बनाने की विधि, ठीक कपड़े पहनने, सफाई, शिशुपालन, घरेलू आय-व्यय इत्यादि गृहस्थ जीवन के विषयों पर विशेष ध्यान देती हैं। नए आविष्कारों से ग्रामीण स्त्रियों को परिचित कराना

तथा उनका उपयोग सिखाना भी एक आवश्यकीय अंग है । अब तो इसका क्षेत्र और भी विशाल होता जा रहा है।

इस संस्था का ध्येय ग्रामीण गृहिणियों को गृहविज्ञान के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना है जिससे उनका जीवन पहले से अधिक सुखमय बन सके। अमरीका के ४८ राज्यों में दो करोड़ से अधिक गृहिणियां इसमें भाग लेती हैं ।

प्रत्येक वर्ष गृहनिर्माण संस्था की सदस्याएं इन शपथों को दोहराती है :—

"हमारा विश्वास है कि ग्रामीण स्त्रियां यदि गृह-निर्माण जैसे श्रेष्ठ एवं पुनीत कार्य में जुट जाएं तो वे देश की सब से अधिक सेवा कर सकती हैं ।"

"हमारा विश्वास है कि घर ही वास्तविक नागरिक शिक्षा और उसकी सफलता की कसौटी है ।"

"हमारा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति की सेवाओं का मूल्य उसके घर में प्राप्त की गई सफलता ही से जांचा जा सकता है।" इत्यादि।

गृहनिर्मात्री संस्था की कार्यकर्त्रियां मेरीलैंड राज्य के २३ सूबों में स्थित है। बड़े-बड़े सूबों में सहायक कार्यकर्त्रियां भी होती हैं । ये गृहस्थस्त्रियों और बालक-बालिकाओं को दैनिक जीवन की समस्याओं पर उचित परामर्श देती हैं।

वास्तव में अमरीका ने अपनी उक्त योजना द्वारा गांवों की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रशंसनीय

प्रयत्न किया है। भारत-जैसे देश में, जहां ७५ प्रतिशत स्त्री-पुरुष ग्रामीण हैं और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं, इसका महत्व और भी अधिक हो जाता है। देश के भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि हम भारत में 'आज का घर कल के भविष्य का निर्माता है' का नारा फिर से बुलन्द करें तथा गृहस्थ स्त्रियों की ओर समुचित ध्यान दें। देश की स्थिति, साधनों तथा आवश्यकताओं के अनुसार इसमें समुचित परिवर्तन किया जा सकता है। वास्तव में अमरीका का यह सफल प्रयास अनुकरणीय है।

भावी नेताओं का निर्माण

भ्रमणार्थ अमेरिका जानेवाले किसी भी व्यक्ति ने बहुधा बालकों की टोलियां धर से उधर आती-जाती देखी होंगी। ये छात्रों की टोलियां प्रत्येक स्थान पर दिखाई देती हैं, चाहे वह स्थान ऐतिहासिक हो अथवा किसी स्थान की राजधानी; अन्तर्राष्ट्रीय संस्था हो अथवा आपको नदी पार लेजाने वाला छोटा जहाज़ (फैरी)। ये बालक-बालिकाएं अकसर नोट लिखते मिलेंगे। आपसे आपके देश के बारे में प्रश्न करेंगे और आपके उत्तरों को तुरन्त ही अपनी नोट बुक में लिख लेंगे।

सब से पहले ऐसी टोलियां मैंने मेरीलैंड स्टेट की प्रसिद्ध चैस्पिक बे (जहां अमेरिका के राष्ट्रपति मि० ट्रूमैन अवकाश का समय अपनी विशेष बोट पर व्यतीत करते हैं) के पार ले जाने वाली बड़ी नौका पर देखीं। उसी समय मैंने मेरीलैंड यूनिवर्सिटी के छात्रों की एक और बड़ी टोली को देखा, जो कि कृषि विभाग से सम्बन्ध रखती थीं। उन लोगों ने बताया कि वे इसी प्रकार जड़ी-बूटी निरीक्षणार्थ दूसरे प्रदेशों में भी जाते हैं। परन्तु सब से कौतूहलजनक स्कूल के बालक-बालिकाओं की टोलियां थीं। इस समय ये बालक बड़े गम्भीर दिखाई दे रहे थे। शीघ्र ही मेरी उत्सुकता का समाधान मेरीलैंड यूनिवर्सिटी के कृषि-विज्ञान के सहायक प्रो० हेमिल्टन ने किया। उन्होंने बताया कि ये बालक

व बालिकायें मेरीलैंड की राजधानी अन्नापालिस से लौट रहे हैं। ये लोग हमारे भविष्य के नेता हैं। अतएव ये वहां संसद की कार्यवाही देखने जाते हैं। तदनन्तर ये लोग स्वयं सभापति तथा सदस्यों के आसन ग्रहण करते हैं और किसी मनोरंजक अथवा संसद् के किसी महत्वपूर्ण विषय पर वाद-विवाद करते हैं। इससे इन्हे वास्तविक स्थान तथा स्थिति में कार्य करने का अनुभव प्राप्त होता है। उन्होंने यह भी बताया कि अमेरिका के देशवासी अपने भविष्य के नेताओं की उचित शिक्षा-दीक्षा के प्रति सर्वदा सचेत तथा सजग रहते हैं। ये लोग प्रत्येक वर्ग से होनहार बालक-बालिकाओं और नवयुवक तथा नवयुवतियों को चुनते हैं। इनको देश से परिचित तथा उपयोगी अनुभव प्राप्त कराने के लिए भ्रमण का आयोजन किया जाता है तथा कैंपों द्वारा इन्हे मनोनीत विषयों में लीडरशिप यानी नेतृत्व करने की समुचित शिक्षा भी दी जाती है। अमेरिका के ये कैंप गर्मियों के अवकाश में विश्व-विद्यालयों, पहाड़ों तभा स्मरणीय स्थानों पर विशेष रूप से जलते हैं, जहां इनको राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का दिग्दर्शन भी कराया जाता है। महत्वपूर्ण विषयों पर बोलने के लिए प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्यक्ति बुलाए जाते हैं। दूसरे देशों के व्यक्तियों को भी भाषण देने के लिए निमन्त्रित किया जाता है। इन कैम्पों में इन्हे विचार-विनिमय के सुअवसर के साथ-साथ अपरिचित व्यक्तियों के साथ रहने की शिक्षा भी प्राप्त होती है। इनके रहन-सहन तथा किराए इत्यादि का प्रबंध, सामाजिक, धार्मिक अथवा शिक्षा सम्बन्धी

गर्मियों की छुट्टियों में कैम्प फायर के निकट गाते हुए बालकों का एक दृश्य ।

नवयुवक व नवयुवति छात्रो की एक टोली बिना मार्ग के पर्वतारोहण कर रही है।

संस्थाएं करती हैं । खाना पकाना, झाड़ू देना, कपड़े तथा बर्तन साफ करने का काम छात्र स्वयं ही करते हैं । कैम्प-संचालन का पूरा उत्तरदायित्व छात्रों की अपनी चुनी हुई एक समिति के हाथ में ही होता है। नेतृत्व की शिक्षा किस प्रकार दी जाती है, इसका विशेष ज्ञान मुझे यूनाइटेड स्टेट्स के १९५० के भ्रमण में प्राप्त हुआ । प्रत्येक स्टेट में मैंने इनके कैम्प लगे पाये। ऊटा प्रदेश की राजधानी साल्ट लेक नगर से करीब ८० मील की दूरी पर लोगान नामक सुन्दर तथा रमणीय पहाड़ी पर एक सुप्रसिद्ध तथा विशाल कृषि और गृह-विज्ञान का महाविद्यालय है, जिसे 'लोगान का कालेज' कहा जाता है। इस स्थान पर नेताओं की ट्रेनिंग के लिए विशेष भवन का निर्माण हुआ है । इसमें भावी नेताओं की शिक्षा-दीक्षा के लिए सब प्रकार के आधुनिक तथा नूतन साधनों व सुविधाओं को जुटाया गया है। यहाँ १५० व्यक्ति एक साथ रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस भवन का व्यवहार पूरे वर्ष भर ही होता रहता है। कभी-कभी सामाजिक व राजनीतिक स्थिति के वास्तविक अनुभवार्थ ये कैम्प दूसरे देशों में भी लगाये जाते हैं। एक ऐसा कैम्प मैंने मेक्सिको में देखा, जहां मेरी एक परिचित अमेरिकन छात्रा पिछड़े लोगों की शिक्षा-पद्धति का अध्ययन कर रही थी।

फोर. एच. क्लब (Four H. Club)

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने ग्रामीण बालक व बालिकाओं के लिए नेतृत्व की शिक्षा का जो प्रबन्ध किया है वह विशेषतः प्रशंसनीय

है। ग्रामीण बालकों के लिए नेतृत्व की शिक्षा का यह काय वहां की फोर. एच. क्लव नामक संस्था द्वारा संचालित होता है। कहीं-कहीं यह 'अमेरिका के नौजवान किसान' (Young Farmers of America) के नाम से भी प्रसिद्ध है । किसान युवक तथा युवतियों को कृषि तथा गृह-विज्ञान की शिक्षा देनेवाली यह सब से वड़ी संस्था है। इसकी सदस्यता अनिवार्य नहीं है; यह केवल वालकों की अपनी इच्छा पर निर्भर है। परन्तु यह ग्रामीण बालक-बालिकाओं, किशोर-किशोरियों, नवयुवक-नवयुवतियों को इस वात का सुअवसर प्रदान करती है कि वे अपने जीवन को पूर्णतः सार्थक बना सकें । अपनी सभाओं और योजनाओं द्वारा यह उनके शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ सामूहिक जीवन तथा नागरिक जीवन के उत्तरदायित्व की शिक्षा भी देती है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्राम्य और नागरिक जीवन की विभिन्नताओं को दूर करना और गृह तथा कृषि-विज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि द्वारा ग्राम के प्रति प्रेम व आकर्षण पैदा करना है।

इस क्लव के प्रत्येक सदस्य को यह शपथ लेनी पड़ती है :

१. अपने मस्तिष्क (head) में मैं सदा स्पष्टतर चिन्तन करने का प्रयत्न करूंगा।
२. अपने हृदय (heart) मे मैं उच्चतर भावनाएं भरूंगा।
३. मेरे हाथ (hands) अधिक से अधिक सेवा करते रहेगे।
४. मेरे स्वास्थ्य (health) का उद्देश्य श्रेष्ठतर जीवन विताना

होगा।

यह सब मैं अपने क्लब, अपने समाज तथा अपने देश के हित के लिए करूंगा।

इस शपथ में चार बार अङ्गरेज़ी के अक्षर 'एच' (H) का प्रयोग होता है। इसी कारण इस संस्था का नाम 'फोर एच क्लब' रखा गया है। इस क्लब का झंडा एक अमेरिकन वृक्ष की। चौकोर पत्तियों का है और उसका रङ्ग हरा है। प्रत्येक पत्ते पर एक 'एच' सफेद रङ्ग का बना है। हरा रङ्ग जीवन का द्योतक है तो सफ़ेद रङ्ग शांति का परिचायक। क्लब के सदस्य-विद्यार्थी सफ़ेद रङ्ग की पतलून व कमीज पहनते हैं और काले जूते पहनते व काली टाई लगाते हैं। लड़कियों की यूनीफार्म हरे रङ्ग की फ्रॉक, सफेद हैट व हाथ का बटुवा है। दोनों बायीं आस्तीन पर हरे रङ्ग का फ़ोर एच का एक चिह्न (बैज) लगाते हैं।

दस मार्ग प्रदर्शक स्तम्भ (Guide Posts)

इस फोर० एच० क्लब के दस आधार स्तम्भ हैं, जिनका वास्तविक उद्देश्य ग्रामीण बालक-बालिकाओं की आवश्यकताओं और रुचि के अनुरूप ही कार्यक्रम निर्धारित करके उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के साथ आर्थिक उन्नति को भी समान महत्व प्रदान करना है। इस सस्था के द्वारा वे लोग ये दस बातें सीखते है :

१. जीवन को अधिक सार्थक बनाना।

२. खेल-कूद, मनोरंजन तथा मित्रता के ढंग सीखना।

३. परिवर्तनशील संसार मे जीवित रहना।

४. धन कमाने का मार्ग निर्धारित करना।

५. घर तथा बाजार के लिए खाद्य तथा अन्य वस्तुएं जुटाना।

६. श्रेष्ठतर जीवन के लिए श्रेष्ठतर गृह-निर्माण।

७. प्रकृति के साधनों को भविष्य के लिए सुरक्षित करना।

८. अमेरिका को शक्तिशाली बनाने के लिए विभिन्न ढंगों से जनता का स्वास्थ्य-निर्माण।

९. सामाजिक उन्नति के लिए कर्तव्य-परायणता की शिक्षा।

१०. विश्व शान्ति के लिए जनता में नागरिक भावना की जागृति।

'फोर. एच. क्लब' मेरीलैंड के कृषि विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी तथा अन्य सस्थाओं व नेताओं के सहयोग द्वारा संचालित होता है। मेरीलैंड स्टेट की प्रमुख स्त्रियों की संस्था भी प्रतिवर्ष कुछ वजीफे उच्च शिक्षा के लिए प्रदान करती है। दस वर्ष से इक्कीस वर्ष तक की आयु के किशोर तथा युवा छात्रों को कृषि तथा गृह-विज्ञान की ऐसी उपयोगी तथा प्रभावोत्पादक बाते बताना, जिनका ज्ञान प्राप्त करना व उसका प्रचार करना वे अपने जीवन का ध्येय बना लें, इसका प्रमुख कार्य है। उद्देश्य यह रहता है कि अपनी आकांक्षाओं को एक सच्चे स्वप्न मे परिवर्तित करने का वे भरसक प्रयत्न करें, ग्रामों की जनता का नेतृत्व करने की शक्ति व उत्साह उनमे उत्पन्न हो तथा लोगों को अपने देश के ग्रामीण जीवन पर अभिमान हो सके।
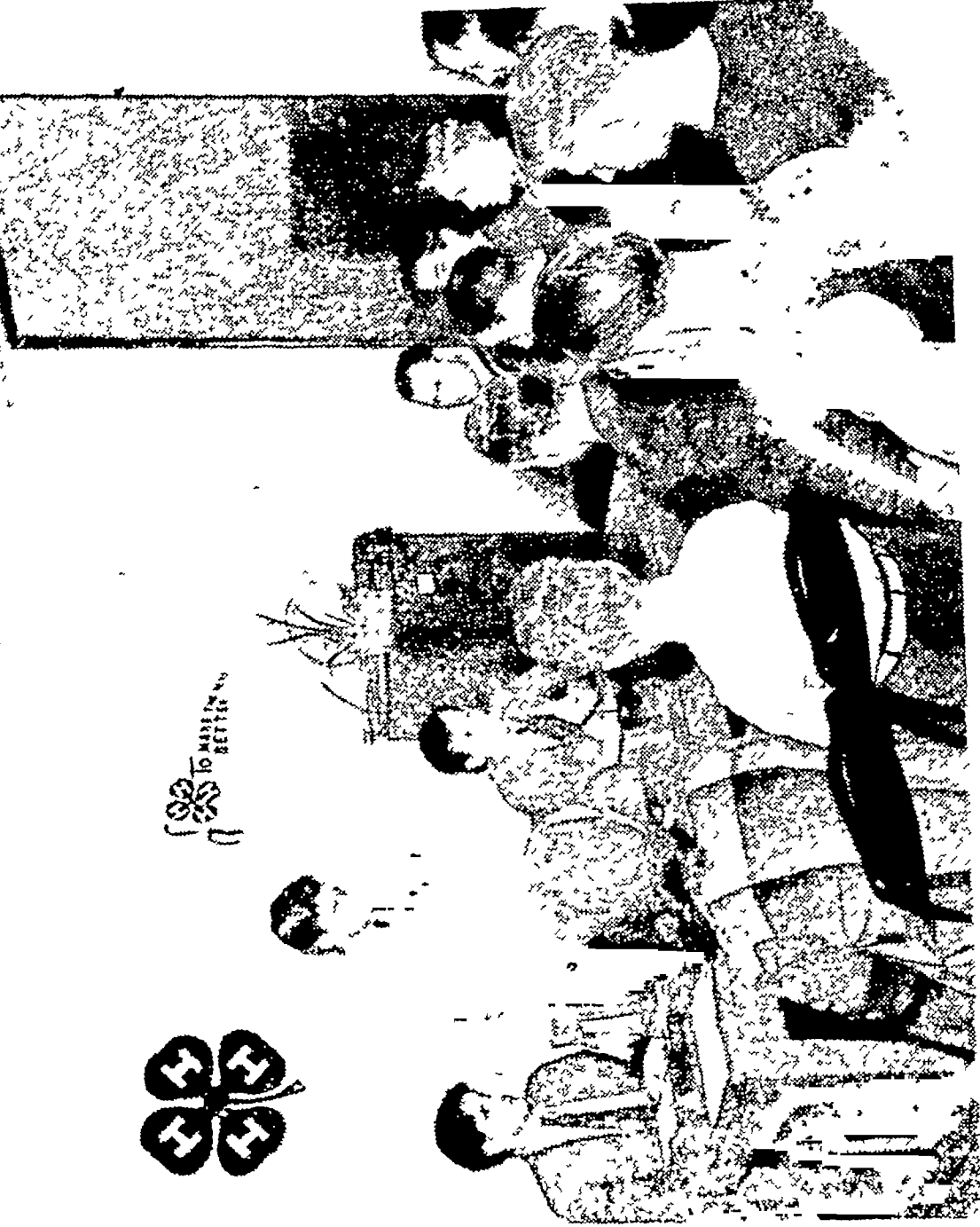
फोर० एच० की एक सभा मे नवयुवक तल्लीन होकर भाषण सुन रहे हैं।

बालकों को जीव-जन्तुओं को पालना और प्रेम करना सिखाया जा रहा है।

इस ध्येय की प्राप्ति के उद्देश्य से 'फोर एच क्लब' के पदाधिकारी गांवों के लोगों की सभाओं का स्वयं आयोजन करते हैं। वे उन्हें अनाज, चौपायों तथा अन्य कृषि-पदार्थों की ठीक परीक्षा द्वारा जांच करना सिखाते हैं। न्यू जरसी स्टेट के एक कौन्सोलिडेटिड हाई स्कूल में मैंने फोर एच क्लब के सदस्यों की एक सभा देखी । इसमें बालक तस्वीरों द्वारा दुधारी गायों के लक्षण पहचानने का प्रयत्न कर रहे थे। इनके समाचारपत्रों में गाय को पहिचानने की प्रतियोगिता भी होती है: ठीक उसी प्रकार, जैसे हमारे देश में आम लोग 'क्रास वर्ड पजल' में भाग लेते हैं। सब से ठीक लक्षण पहचानने वालों को पुरस्कार मिलता है । वर्ष के प्रारम्भ में बालक व बालिकाएँ अपने लिए एक योजना चुन लेते हैं। उदाहरणार्थ किसी गाय के बछड़ा होने के समय तक, उस घर का 'जॉन' नामक बालक इसी प्रतीक्षा में रहता है, कि कब बछड़ा उत्पन्न हो ताकि वह उसका संरक्षक बन सके। बछड़े के जन्म का समाचार मिलते ही जॉन उसे अपने अधिकार मे कर लेता है और 'अपने ग्राम के काउंटी एजेन्ट की संरक्षा में वैज्ञानिक रीति से उसका पोषण करता है । वर्ष के अन्त में जॉन बड़े गर्व से उसे प्रान्त के मेले में दिखाने ले जाता है। इसी प्रकार घर की बालिका 'मेरी' कोई ड्रेस बनाने अथवा आचार-मुरब्बे डालने की योजना ले लेती है। सब से अच्छा कार्य दिखाने पर बालक व बालिकाओं को पुरस्कार मिलते हैं। इनकी योजनायें बहुत भांति की होती हैं। शहद की मक्खियाँ पालना,

शाक भाजी लगाना, फूल-पौधे उगाना आदि बीसों योजनायें ये बालक-बालिकायें सहज ही सीख जाते हैं। घर इनकी योजनाओं का एक विशेष तथा महत्वपूर्ण स्थान है। मुख्यतया योजनायें इसी तरह की चुनी जाती हैं, जिसमें माता-पिता अपने बालक-बालिकाओं से अधिक निकटतम सम्बन्ध स्थापित कर सकें। इनका ध्येय बालकों मे काम करने की अभिलाषा तथा आत्म-विश्वास पैदा करना और उसकी प्राप्ति का प्रयास है। इसके अतिरिक्त कृषकों को नागरिक व्यापारों के तौर-तरीकों से परिचित कराना तथा स्वस्थ जीवन, प्रकृति से प्रेम, खेल-कूद से प्रेम, व्यक्तित्व विकास की भावना, कर्तव्य-परायणता तथा सामाजिक जीवन में पूर्ण रूप से भाग लेने की शिक्षा का प्रबन्ध करना भी इसी के अन्तर्गत है।

मैरीलैंड स्टेट बोर्ड ऑफ़ फेयर

मेरीलैंड प्रान्त के मेलों का आयोजन करने वाली यह संस्था अपना रुपया मेरीलैंड के विश्वविद्यालय को वहाँ की फोर एच संस्था के संचालन के लिए प्रदान करती है और स्वयं ग्राम, तहसील तथा प्रान्त भर मे ग्राम्य-मेलों का आयोजन करती है। इसी प्रकार समय-समय पर ग्रामवासियों के लाभार्थ प्रदर्शनियों का आयोजन भी यह संस्था करती है। इसके द्वारा विभिन्न विषयों पर पुरस्कार वितरण होते हैं। इसी के द्वारा पुरस्कार-विजेताओं को प्रान्त व देश के भ्रमण अथवा उस विषय में उच्चशिक्षा ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त होता है। इन ग्राम

तथा प्रान्तीय मेलों और प्रदर्शनियों में अनेकों स्त्री और पुरुष, बालक और युवा भाग लेते है। जहाँ ये लोग अपने यहाँ के बढ़िया अनाज, शाक-भाजी, फूल, पौधों, चौपायों, मुर्गे-मुर्गियों, सूअर तथा अन्य कृषि व गृह सम्बन्धी औज़ारों का प्रदर्शन करते हैं। ग्राम-वासी लोगों की हॉबी का भी प्रदर्शन होता है। जिस बालक की बनाई गई वस्तु अथवा जानवर और बालिका के सिले कपड़े, आचार-मुरब्बा आदि सब से बढ़िया होते है, उसे 'ब्लू रिबन' मिलता है। यह नीला फीता बड़े सम्मान की वस्तु है। इन प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले जानवर बड़ी-बड़ी रकमों पर विक्रय किये जाते हैं। अतएव ये कृषक-बालक वर्ष भर अपनी योजना पर बड़े मनोनियोग से कार्य करते है। इन बालक-बालिकाओं के काम का स्तर काफी ऊंचा होता है। मेलों में ये बालक अपने ग्राम तथा प्रान्त के स्टॉलों को बड़ी उत्तमता तथा सुन्दरता से सजाते हैं और उन मेलों की सफलता इन लोगों के परिश्रम का ही परिणाम होती है। ग्राम की इन संस्थाओं को चलाने का श्रेय विशेषज्ञ अपने ऊपर न लेकर अपने भावी नेताओं को ही देते हैं। इस संस्था के सुन्दर प्रयत्नों का ही परिणाम है कि आज अमेरिका के ग्राम श्री तथा समृद्धि से सम्पन्न दिखाई देते हैं।

ऐमिली ग्रिफिथ का अपरच्युनिटी स्कूल

अमेरिका की शिक्षा-पद्धति के अध्ययन अथवा शिक्षालयों के निरीक्षण के उद्देश्य से अमेरिका जाने वाले लोग वहाँ के शिक्षकों के अदम्य उत्साह, अध्यवसाय तथा कार्य-संलग्नता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। वास्तव में अमेरिका के शिक्षक ही वहाँ के राष्ट्र-निर्माता हैं। वहाँ के शिक्षकगण हमारे समान केवल विचार-विनिमय तथा चिन्तन द्वारा ही सन्तोष नहीं प्राप्त कर लेते, अपितु अपने विचारों और योजनाओं को कार्यरूप में परिणत करने व सफल बनाने मे सतत प्रयत्नशील रहते हैं। वे सदा व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास के कार्यों में जुटे रहते हैं। वे इसे अच्छी तरह जानते हैं कि अमेरिकन जनतन्त्रवाद का वास्तविक;आधार यही है कि किस प्रकार देशवासियों को ऐसे सुअवसर प्रदान किये जाएं जिनसे वे अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक प्रवृत्तियों का विकास कर समाज में समता प्राप्त कर सकें, अपने देश के व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन को अधिक से अधिक सफल बना सकें। इस महान उद्देश्य में उन्हें अमेरिकन समाज व जनता से भी प्रोत्साहन तथा पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है। वे लोग समय का सदुपयोग करते हैं और खाली नहीं बैठे रह सकते।

ऐमिली ग्रिफिथ इन्हीं शिक्षकों में से एक थीं। एक प्राइमरी

स्कूल का अध्यापन कार्य करते हुए ऐमिली ने यह अनुभव किया कि बालकों की वास्तविक समस्याएं उनकी नहीं, वरन् उनके माता-पिता की समस्याएं हैं। अधिकांश शिक्षकों की तरह केवल पुस्तक-ज्ञान पर जोर देना उन्हें पसन्द नहीं था। उनके पठन का विषय उनके चारों ओर रहने वाले व्यक्ति थे। बालकों के माता-पिताओं की कठिनाइयों व समस्याओं को समझना और उन्हें दूर करने में उनकी सहायता करना ही उनके पठन-पाठन का मुख्य विषय बन गया। उन्होंने बालकों के घरों का निरीक्षण किया और देखा कि अधिकतर माताएं गृह-प्रबन्ध तथा शिशु-पालन व शिशु-शिक्षा के विषय से नितान्त अनभिज्ञ थीं। उनके पिता व बड़े भाई अपने जीविका-निर्वाह के व्यापारों में दक्ष न थे। अधिकांश घरों में बच्चों की बड़ी बहनें बिना किसी प्रकार की ट्रेनिंग के जिस किसी प्रकार अर्थोपार्जन का प्रयत्न कर रही थीं। वास्तव में ये लोग जिन व्यवसायों में लगे हुए थे उनके उपयुक्त न थे। अतएव उनके लिए उनका जीवन भार रूप हो रहा था। अधिकांश घरों में ऐमिली को ऐसे चिन्तित और हताश व्यक्ति मिले जो माता-पिता या नागरिक जीवन के उत्तरदायित्व सम्भालने में सर्वथा अनुपयुक्त थे; और इस दशा का मुख्य कारण था, शिक्षा तथा ट्रेनिंग का अभाव।

ऐसे व्यक्तियों को किस प्रकार ऐसा सुअवसर दिया जाय, जिससे कि वे अपनी हीनताओं को दूर कर अपने व्यक्तित्व के विकास के द्वारा सफल जीवन-यापन कर सकें, इस विचार ने

उन्हें शिक्षा-विभाग के अधिकारियों (बोर्ड ऑफ़ एजुकेशन) से मिलने को बाधित किया। ऐमिली ने शिक्षाधिकारियों से कहा कि प्रौढ़ों को भी शिक्षा, सम्मति तथा सहायता की उतनी ही आवश्यकता है जितनी बालकों को। अतएव जिन प्रौढ़ों को अपने बालकपन में किसी कारणवश ऐसा सुअवसर प्राप्त न हो सका, जो कि उनके आगामी जीवन को पूर्ण व सफल बना सकता, तो सरकार का कर्त्तव्य है कि उनको फिर से ऐसा सुअवसर दे। उनके इस विचार का समर्थन जनता ने भी किया। ऐमिली के अनथक परिश्रम के परिणामस्वरूप एक सुप्रसिद्ध प्रौढ़-शिक्षा-केन्द्र की नींव सन् १६१६ में पड़ी, जो आगे चल कर ऐमिली के 'अपरच्युनिटी स्कूल' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

यह संस्था आजकल डेनवर की सार्वजनिक प्रौढ़-शिक्षा विभाग की एक शाखा है। कोलाराडो स्टेट का सोलह वर्ष से ऊपर आयु का कोई भी व्यक्ति इसमें निःशुल्क प्रवेश कर सकता है। इसके नियम बहुत ही आसान है जो केवल वर्कशाप की सुरक्षा के लिए ही बनाए गए हैं। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता है कि वह अपनी सुविधा तथा इच्छानुसार जब और जिस समय चाहे कला-कौशल, व्यवसाय अथवा किसी भी विषय (गृह-निर्माण, नागरिक जीवन अथवा व्यावसायिक जीवन से सम्बन्धित कोई भी विषय) को लेकर जीवन को उन्नत व सफल बनाने का प्रयत्न करे। इस स्कूल की श्रेणियाँ प्रातः से लेकर रात्रि तक विभिन्न ग्रुपों में जारी रहती हैं। इसके आश्रित केन्द्रों का कार्यक्रम भी इसी प्रकार

है। लोगों की सुविधा और आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

वास्तव में यह संस्था देश की दूसरी औद्योगिक अथवा व्यावसायिक संस्थाओं से भिन्न है। इस संस्था को हम और शिक्षालयों के मापदण्ड से नहीं माप सकते। इसने डैनवर निवासियों के व्यक्तिगत, सामाजिक तथा नागरिक जीवन के निर्माण में अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग लिया है। इस संस्था का आदर्श सदा यह रहा है कि लोगों को जिस समय, जितनी और जिस रूप में शिक्षा की आवश्यकता हो, उसी रूप और परिमाण में उन्हें तुरन्त ही शिक्षा दी जाय, जब कि उन्हें उसकी आवश्यकता हो, ताकि अपनी समस्याओं का हल वे स्वयं निकाल सकें और जीवन और जीवन के प्रति हताश होने का भाव कभी अपने मन में न लावें।

सन् १९५० की जुलाई मास में जब मैं इस संस्था को देखने गई उस समय यह संस्था गर्मी की छुट्टियों के कारण पूर्ण रूप से कार्य नहीं कर रही थी। इसके बड़े-बड़े वर्कशॉप बन्द थे, परन्तु इसके प्रधान, उपप्रधान आदि प्रमुख अधिकारी वहाँ उपस्थित थे। कैफीटीरिया संचालन, रोगी-सेवा, मातृत्व, शिशु-पालन तथा शिल्प इत्यादि की जमातें नियमित रूप से उन दिनों भी चल रही थीं। कुछ छात्र व्यावसायिक कार्यालयों मे अपनी योजनाओं पर काय कर रहे थे। इसकी बिल्डिग और वर्कशाप कई ब्लाकों में फैले हुए थे। संस्था की उपप्रधाना हैलेन डी० रैडफोर्ड ने बताया कि इस समय इसमें भिन्न-भिन्न विषयों पर २२५ से ऊपर श्रेणियां

चल रही हैं, जिनमे मोटर व बिजली की इंजीनियरिंग शिक्षा से लेकर हवाई जहाज तक के वर्कशाप में छात्रों को ट्रेनिंग दी जाती है। साधारणतः प्रतिदिन ५०० से अधिक क्लासे लगती हैं और इनमें छात्रों की संख्या ३,००० से ऊपर रहती है । इस स्कूल की ख्याति सारे यूनाइटेड स्टेट्स में व्याप्त है। प्रथम महायुद्ध तथा द्वितीय महायुद्ध ने इसके क्षेत्र को बहुत विस्तृत कर दिया है। इस संस्था ने युद्ध से लौटे हुए सिपाहियों को फिर से नागरिक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाने में अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है।

ऐमिली ग्रिफिथ ने अपने प्रयोग में कितनी जल्दी सफलता प्राप्त की थी, इसका अनुमान हम मेरी ला ड्यू (Marie La Due) के मार्च १६१८ के अमेरिकन मैगजीन के एक लेख से लगा सकते हैं, जहां कहा गया है कि "अपरच्युनिटी स्कूल में एक कमी है । वह यह कि स्कूल जैसे मूर्तिमान ऐमिली ग्रिफिथ हैं, और उनकी सहायता के बिना नहीं चल सकता । जिस स्वरूप में हम आज इस संस्था को देख रहे हैं उसका सफल श्रेय ऐमिली को है ।" परन्तु ऐमिली ग्रिफिथ ने उक्त धारणा को झूठा कर दिखाया, और १६३४ में जब वह अपने पद से पृथक हुई, उस समय तक उन्होंने ऐसे व्यक्ति तैयार कर दिए थे, जिन्होंने संस्था को आज के उच्च स्थान पर पहुँचा दिया है।

डेनवर का सार्वजनिक शिक्षा-विभाग इस संस्था द्वारा ही प्रौढ़ व्यक्तियों का पथ-प्रदर्शन करने, उनकी नियुक्ति करने (placement) तथा उन्हें प्रमाण-पत्र देने की सुविधा का अवसर प्रदान करता
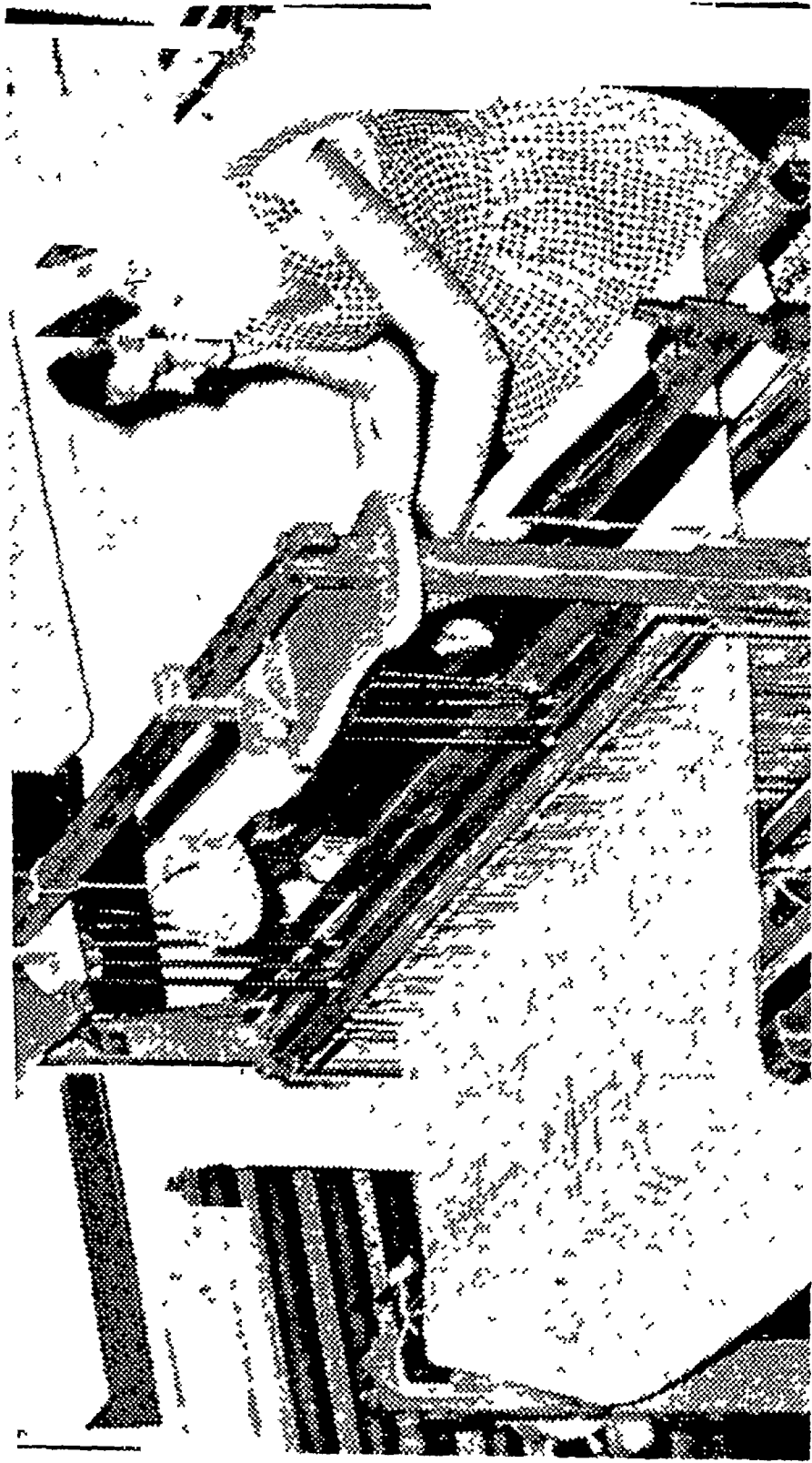
अपरच्युनिटी स्कूल की एक छात्रा करघे पर कपड़ा बुनने की कला में दक्षता प्राप्त कर रही है।

अपरच्युनिटी स्कूल मे एक गृहिणी छात्रा अच्छे व बुरे अण्डे परखना सीख रही है।

है। हैलेन रैड फोर्ड ने कहा : "वास्तव में डैनवर का सम्पूर्ण मानव समाज ही हमारी प्रयोगशाला है। यहां के निवासियों की सेवा ही हमारा मुख्य ध्येय है। इसी लक्ष्य को सम्मुख रखते हुए हमने इसके साधन जुटाये हैं और ट्रेनिंग की सुविधायें एकत्र की हैं। शिक्षक भी इसी भाव से चुने गए है कि वे एक जीवित संस्था के रूप मे व्यवसायी, अर्ध-व्यवसायी तथा दूसरे पेशेवाले डैनवर निवासियों की शिक्षा का सुचारु प्रबन्ध कर सकें।"

इस संस्था का सम्बन्ध उस वास्तविक जीवन से है, जो कि डैनवर समाज आज के दिन व्यतीत कर रहा है, अतः यहां का शिक्षक समुदाय सर्वदा इस क्षेत्र के विकास और समयानुकूल विषय परिवर्तनों के सम्बन्ध में सतर्क और सचेत रहता है। इस संस्था की शिक्षा के मुख्य आधार तीन विषय हैं—व्यवसाय, गृह-प्रबन्ध और समाजशास्त्र। इसके अन्तर्गत सभी विषय आजाते हैं। हाई स्कूल की शिक्षा भी इसके अन्तर्गत ले ली गई है।

प्रारम्भ से ही इस संस्था में सहयोग द्वारा कार्य किया जाता रहा है। ऐमिली ग्रिफिथ ने अनेकों व्यवसायशालाओं और घरों की स्थिति का निरीक्षण किया और वहां के अधिकारियों से पूछा कि वे इन लड़के व लड़कियों में किस प्रकार की कमी का अनुभव करते हैं। बड़ी-बड़ी व्यावसायिक कम्पनियां तथा व्यापारी इस संस्था में दिलचस्पी लेने लगे और ऐमिली की योजना में उन्होंने पूर्ण सहयोग दिया। ट्रेड यूनियनों ने भी अपनी अमूल्य सम्मति प्रदान की। यही कारण है कि यह संस्था द्वितीय महायुद्ध से लौटे

सिपाहियों को बसाने में इतनी प्रशंसनीय सहायता दे सकी।

इस स्कूल के वर्तमान प्रिंसिपल हार्वर्ड जॉनसन का कहना है : "प्रौढ़ों को कभी इस बात का खेद नहीं करना चाहिए कि वे ३० वर्ष पहले क्यों उत्पन्न हुए। डैनवर में उनके बीच में ऐसी संस्था है, जहां आकर वे अपनी समस्याएं दृढ़ विश्वास के साथ हल कर सकते हैं। उस संस्था में उनकी समस्याओं को सहृदयता से समझने, सुलझाने तथा दूर करने मे पूर्ण सहायता मिलेगी। कल के अनुभव स्वरूप ही डैनवर के इस प्रौढ़ विद्यालय का इतना विस्तृत प्रोग्राम है। आगामी कल यह संस्था इससे भी अधिक समाज की सेवा कर सकेगी, क्योंकि यह प्रौढ़ शिक्षा की अग्रगण्य संस्था है। यह अपने मूल सिद्धान्त अर्थात् 'व्यक्तिगत छात्र सेवा' के आदर्श को नहीं भूली है। डैनवर को एमिली ग्रिफिथ के इस 'अपरच्युनिटी स्कूल' के लक्ष्य व योजना में अब भी उतना ही विश्वास है। हम सब डैनवर निवासी इसके व्यावसायिक तथा कलात्मक क्षेत्र की सुविधाओं के विकास को बढ़ाने मे एकमत हैं। वास्तव में डैनवर के ऐमिली ग्रिफिथ स्कूल का इस विकास-क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान होगा, क्योंकि व्यावसायिक अथवा औद्योगिक उन्नति मनुष्य के साधनों के विकास पर ही निर्भर है।"

पारिवारिक सम्बन्ध-विज्ञान की शिक्षा

पारिवारिक सम्बन्ध एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, परन्तु अमेरिका जाने से पहले मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि यह विषय भी विश्वविद्यालयों का पाठ्य विषय बन सकता है। तब तक मेरा ख्याल था कि घर ही इसका उपयुक्त स्थान है। यही कारण था कि अमेरिका जाने पर जब मैंने सुना कि यह विषय विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है, तो पहले तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और कुछ समय बाद यह भाव उपेक्षा भाव में बदल गया। मैंने सोचा कि हो सकता है कि इस देश को इस विषय की आवश्यकता हो। क्योंकि गुन्थर की 'इनसाइड अमेरिका' नामक पुस्तक में मैंने पढ़ रखा था कि अमेरिका में प्रत्येक तीसरा विवाह विच्छेद में समाप्त होता है। परन्तु भारत-वासियों को यह विषय सीखने के लिए विश्वविद्यालयों में जाने की क्या आवश्यकता है? उन्हे घरों में ही इस सम्बन्ध में उपयुक्त शिक्षा प्राप्त हो जाती है। परन्तु उपेक्षा का भाव अधिक दिन तक न टिक सका और शीघ्र ही वह जिज्ञासा में परिणत हो गया।

वहां रहते कठिनता से एक मास भी पूरा न हो पाया था कि मेरीलैंड विश्वविद्यालय की एक छात्रा ने अचानक मुझसे पूछा,

"क्या आप हमारी पारिवारिक सम्बन्ध की क्लास में 'एशिया में विवाह और वैवाहिक रीतियों' पर बोलना स्वीकार करेंगी ? हम लोग आजकल दूसरे देशों की विवाह-पद्धतियों के विषय में पढ़ रहे हैं। मैं अपनी क्लास के प्रोफेसर डा० शैंकवल की ओर से आपको क्लास में भाषण देने के लिए निमन्त्रित करने आई हूँ।"

निमन्त्रण स्वीकार करते हुए मैंने उस छात्रा से पूछा कि इस विषय को विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने की क्या आवश्यकता है ? इस प्रश्न से उसे कुछ आश्चर्य हुआ और उसने उत्तर दिया कि इस विषय को इस देश में बहुत महत्व प्रदान किया जाता है। तब मैंने इस बारे में स्पष्ट ही पूछा, "क्या आप इस विषय की शिक्षा घर में नहीं प्राप्त कर सकतीं ?"

उस छात्रा ने उत्तर दिया, "आपकी धारणा ठीक नहीं है। अमेरिका के प्रत्येक परिवार में केवल एक या दो बालक होते हैं। माता-पिता का सारा प्रेम उन पर केन्द्रित होता है। अतएव ये बालक संसार को बहुत संकुचित दृष्टि से देखते हैं और अधिकतर बहुत स्वार्थपरायण बन जाते हैं। अतः वैवाहिक जीवन की कठिनाइयों व समस्याओं को विवाहोपरान्त वे समझ नहीं पाते। इस कारण उनका वैवाहिक जीवन या तो नीरस बन जाता है अथवा विवाह-विच्छेद द्वारा समाप्त हो जाता है।"

उसके इस उत्तर ने भी मेरी पहली धारणा की पुष्टि की।

नियत समय व तिथि पर जब मैं भाषण देने गई, तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने वहां लड़कियों के साथ लड़कों को भी

समान रूप से बैठे पाया। कौतूहल निवारणार्थ पास बैठे एक नवयुवक से मैंने धीरे से पूछा, "क्या आप लोग आज ही यहाँ आए हैं या आपने भी यह विषय ले रखा है?" शायद वह मेरे मन के भाव समझ गया, क्योंकि मेरे विचार में तो यह विषय केवल लड़कियों से सम्बन्ध रखता था। उस नवयुवक नें उत्तर दिया कि हम लोग भी इस विषय का अध्ययन करते हैं, क्योंकि वैवाहिक जीवन का आनन्द और शिशुओं के लालन-पालन का उत्तरदायित्व माता-पिता दोनों पर अवलम्बित है।

इन लोगों ने मेरे भाषण को बहुत ध्यान से सुना। मैंने उन्हें बताया कि हिन्दू वैवाहिक रीति तथा जनमत में सदा से परिवर्तन होते आए हैं। वैदिक काल के स्वतन्त्र समाज तथा आज में बहुत अन्तर है। हिन्दुओं में सामाजिक बहिष्कार जैसी कोई प्रथा प्रचलित नहीं है। पुरुषों को बहुविवाह की आज्ञा है, परन्तु समाज इसे पसन्द नहीं करता, अतएव वह प्रचलित नहीं है। विवाह-विच्छेद की प्रथा भारत के मुस्लिम, ईसाई तथा पारसी समाज में विद्यमान तो है, परन्तु इसका प्रयोग बहुत ही कम तथा शारीरिक व मानसिक असहनीय यातना के समय में ही होता है। बहुत सम्भव है कि बहुसंख्यक हिन्दुओं का प्रभाव इन लोगों पर भी पड़ा हो। मेरी समझ में सारे एशिया में भिन्न-भिन्न धार्मिक समुदाय होने पर भी कुछ धार्मिक सिद्धान्तों व विवाह के सम्बन्ध मे एक ही विचारधारा विद्यमान है। मैंने उन्हें यह भी बताया कि हमारा नया हिन्दू कोड बिल, जिस पर भारतीय संसद विचार कर

रही है, पास हो जाने के अनन्तर भारत मे स्त्रियों को बहुत अंशों में कानूनी तथा आर्थिक समता प्राप्त हो जायगी, और स्त्री-पुरुष का अन्तर कम हो जायगा। तब हिन्दू समाज तथा दूसरे भारतीय समुदायों के विवाह-कानूनों में अधिक अन्तर न रहेगा।

उन्होंने यह भी पूछा कि प्रेम-विवाह तथा युवक-युवतियों के परस्पर मिलन को भारतीय नवयुवक किस दृष्टिकोण से देखते हैं। मैंने कहा कि विश्वविद्यालयों में दोनों को मिलने के सुअवसर प्राप्त हैं, परन्तु बहुधा यही देखा गया है कि विवाह के समय ये लोग एक अजनवी को ही अधिक पसन्द करते हैं। डा० शैंक्वेल ने कहा कि मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि आपके यहाँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं है। मेरे मुख से अनायास निकल गया कि वास्तव में वैयक्तिक स्वतन्त्रता किस सभ्य समाज में है? मेरे इस उत्तर से सब को बहुत हंसी आई।

इसके अनन्तर डा० शेक्वेल ने मुझे अपनी और क्लासो में भी बोलने को बुलाया तथा कुछ भारतीय फिल्मे भी मैंने उन लोगों को दिखाईं। इन अवसरों पर मुझे बताया गया कि जो नैतिक उच्छृङ्खलता छात्रों में दिखाई देती है, वह द्वितीय महायुद्ध की देन है। युद्ध से लौटे हुए सिपाही जब हज़ारों की संख्या में विश्वविद्यालयों में भरती हुए, तब उन लोगों पर नियंत्रण तथा अनुशासन रखना एक समस्या बन गया। परन्तु इस स्थिति पर काबू पाने का अब भरसक प्रयत्न किया जा रहा है।

एक सीमेस्टर के बाद मैंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्रवेश

किया। यहां मुझे माता-पिता की शिक्षा के मार्ग साधन-विधान की शिक्षा देने वाली कुछ महत्वपूर्ण संस्थाएं देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। डा० आसवर्न इस विषय को पढ़ाते थे। पारिवारिक जीवन का विषय भी वह पढ़ाते थे। इनकी पारिवारिक जीवन की एक क्लास में ५०० से अधिक छात्र होते थे, इसी से उस विषय के महत्व तथा पढ़ाने वाले की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है।

कुछ महत्वपूर्ण संस्थाएं

१. अविवाहित माताओं का गृह : मैंने जो गृह देखा, उसका प्रवन्ध एक यहूदी महिला के अधीन है। यह एक बड़ी उमर की सीधी-सादी स्त्री है, परन्तु अपने कार्य मे बहुत दिलचस्पी लेती है। इस महिला ने बताया कि यहाँ १५ से ४० वर्ष तक की उमर की स्त्रियां आती है, परन्तु अधिक संख्या नवयुवतियों की ही होती है। इस संस्था का उद्देश्य समाज से बहिष्कृत इन युवतियों को फिर से सामाजिक जीवन-यापन करने योग्य बनाना है। अधिकतर देखा गया है कि ये स्त्रियां कम आयवाले घरों से ही आती हैं, अथवा उन घरों से जिनके माता-पिता का पारस्परिक जीवन अच्छा न हो। घर मे सौहार्द्र न होने से माता-पिता बालक के प्रति अपना उत्तरदायित्व पूरा नहीं कर पाते। घर के दैनिक झगड़ों से ऊब कर ये बालिकाएं घर के बाहर कहीं भी अपना समय व्यतीत करना अच्छा समझती हैं, और छोटी उम्र की नासमझी के कारण आसानी से फंस जाती हैं। अमेरिका में गर्भ-

निरोध के उपायों के प्रचार के उपरान्त भी बहुत-सी स्त्रियों को उनका ठीक प्रयोग नहीं आता, अथवा कभी उपेक्षावश भूल हो जाती है। जब ये स्त्रिया इस रक्षागृह में आती हैं, इनकी दशा दयनीय होती है। जीवन के प्रति उनमें मोह नहीं रह जाता, तथा अपने प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है । यहां जीविकोपार्जन की शिक्षा के साथ-साथ इन्हे गृह-विज्ञान, पारिवारिक तथा सामाजिक सम्बन्ध की शिक्षा भी दी जाती है और यथासाध्य हीनता का भाव हटाने की चेष्टा की जाती है। प्रत्येक युवति को सुन्दर फर्नीचर से सजा एक कमरा मिलता है। हमें बताया गया कि इन कमरों के दरवाजों व खिड़कियों के पर्दे, मेजपोश आदि स्वयं उनमें रहने वाली स्त्रियों ने बनाए हैं। उन कमरों का रंग भी उनकी अपनी पसन्द का ही है। उन्हे अपनी रुचि के अनुसार कमरा सजाने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। उनका मन लगाने के लिये बागवानी तथा इस तरह की कितनी ही हॉबियों (स्वेच्छा-कार्यों) का भी प्रबन्ध है, जैसे चित्रकला, संगीत, फोटोग्राफी आदि। उस गृह की संयोजिका बूढ़ी होने पर भी अपने कार्य को बड़ी संलग्नता तथा दक्षता से करती थी। सारे रक्षा-गृह में एक परिवार का-सा वातावरण था। सुन्दर फूल, रंगीन मेजपोश तथा चित्रों से सजे कमरे आत्मीयता का परिचय दे रहे थे। उनके अपने कमरे की मेज सुन्दर पुस्तकों से सुशोभित थी। मैंने इन पुस्तकों मे मार्गरेट मीड की नयी पुस्तक 'पुरुष और नारी' (Male and Female) भी देखी।

२. गृह न्यायालय : टूटे हुए अथवा टूटने की सम्भावनावाले

गृहस्थों को उचित परामर्श देने के लिए ये गृह न्यायालय बनाए गए है। इस न्यायालय के न्यायाधीश कानूनों का प्रयोग न करके मनोविज्ञान तथा पारस्परिक सहानुभूति द्वारा पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करते हैं। इन लोगों का विचार है कि सामाजिक शिक्षा अथवा प्रौढ़ शिक्षा के विद्यार्थियों को इन न्यायालयों में आकर लोगों के वृत्तान्त सुनने चाहिएं। आजकल की शिक्षा की सब से बड़ी त्रुटि यह है कि लोग नहीं जानते कि शान्तिपूर्ण जीवन कैसे व्यतीत किया जाय। पारिवारिक शिक्षा बहुत से उजड़ते घरों को बचा सकती है। इन न्यायालयों में पति-पत्नी के झगड़ों का निपटारा करते हुए सन्तान के भविष्य का ध्यान सब से अधिक रखा जाता है। यहां बालकों के खाने व खेलने के कमरे भी बने हुए है। शिक्षित नर्सें इन बच्चों की देख-भाल उस समय तक करती हैं, जब तक उनके माता-पिता न्यायालय में रहते हैं। इनका वातावरण भी घर के ही समान है। यहां अभियुक्त तथा न्यायाधीश का सम्बन्ध दूसरे न्यायालयों से भिन्न है। यहां न्यायाधीश अभियुक्तों का मित्र होता है।

३. बालकों के ग्राम : यहां भी अधिकतर उन्हीं घरों के बालक लाए जाते है, जिनके माता-पिता की या तो आय कम है, अथवा उनका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है, या जिन घरों में असन्तोष व कलह का साम्राज्य है। ऐसे घरों के बालक प्रायः समाज-द्रोही बन जाते हैं और छोटी आयु में ही घरों से निकल जाते हैं। अधिकांश दशाओं में वे अनुचित कार्यों में दक्षता प्राप्त कर लेते हैं। इस

सुन्दर ग्राम में बालकों की व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया जाता है, जिससे कि ये अपने पैरों पर खड़े होकर स्वावलम्बी तथा स्वतन्त्र जीवन व्यतीत कर सके। ये १०-१२ की टोली में एक शिक्षक के परिवार मे रहते है। इन घरों में टेलीविजन, रेडियो, रिफ्रेज्ररेटर आदि सुख-आराम की सामग्री तथा आमोद-प्रमोद के सभी साधन मौजूद रहते है । इन ग्रामों का सारा शासन-विधान बालकों द्वारा ही निमित और संचालित होता है। बालकों द्वारा शासित यह ग्राम वास्तव मे एक आदर्श संस्था हैं।

४. मार्गरेट सैंगनर रिसर्च ब्यूरो : इस संस्था में सन्तति-नियन्त्रण तथा गर्भ-निरोध के साधनों का प्रयोग सिखाया जाता है। यह संस्था पारिवारिक योजना (Family Planning) की शिक्षा का भी केन्द्र है। इस विषय की खोज के लिए यह संस्था प्रसिद्ध है। वहां के संरक्षक डाक्टर स्टोन (Stone) ने एशिया के छात्रों को लक्ष्य करके मुझसे कहा : "पश्चिमी देशों में बालक उस समय आते है, जब उनके माता-पिता उन्हे निमन्त्रित करते हें। अनिमन्त्रित बालक यहा नहीं आते।" जनसंख्या का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा, "पश्चिमी देशों का जीवन-स्तर ऊंचा होने का एक मुख्य कारण यह है कि हम लोगों ने अपने परिवारों को अनियमित रूप से बढ़ने नहीं दिया । एशिया मे भी जब तक सन्तानोत्पत्ति पर प्रतिबन्ध नहीं लगेगा, तब तक उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं होगा। संसार की भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती

जा रही है। सम्भव है निकट भविष्य में प्राचीन काल की तरह भूखे लोगों के दल दूसरे देशों पर आक्रमण करने निकल पड़ें।"

विवाह तथा पारिवारिक जीवन एक पाठ्य विषय बनकर पश्चिम में सब से पहले प्रथम महायुद्ध के बाद आया। विवाह सहायक केन्द्र सब से प्रथम जर्मनी व आस्ट्रिया में खुले थे। इस विषय का सब से बड़ा केन्द्र १६१६ मे श्री हर्षफील्ड ने 'बर्लिन इन्स्टीटयूट फ़ॉर सैक्सुअल साइंस' (लिंग-विज्ञान की बर्लिन संस्था) के अन्तर्गत खोला। आस्ट्रिया मे डाक्टर केण्ट्स्मी ने 'सैंटर फॉर सैक्सुअल लाइफ़' (लैंगिक जीवन-केन्द्र) खोला। धीरे-धीरे यह विचार फैलने लगा, और डेनमार्क, स्वीडन तथा दूसरे देशों में भी इस प्रकार के केन्द्र स्थापित किए गए। १६३२ में तो हज़ारों की संख्या में लैंगिक शिक्षा के केन्द्र जर्मनी व आस्ट्रिया मे खुल गए और केवल हिटलर के आने बाद ही इनकी प्रगति रुकी।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में विवाह संस्थाओं तथा परामर्श-केन्द्रों मे परस्पर सहयोग रहा। क्रमशः लोकप्रिय होकर यह विषय न केवल विश्वविद्यालय का ही पाठ्य विषय बना दिया गया, अपितु कहीं-कहीं हाई स्कूल का भी पाठ्य विषय बन गया। पारिवारिक सम्बन्धों की शिक्षा देने के लिए राष्ट्रीय तथा स्थानीय संस्थाएं बनीं और इस सम्बन्ध में अनुसन्धान का भी श्रीगणेश हुआ। सब से प्रथम यह विषय बोस्टन विश्वविद्यालय में पढ़ाया गया। इस विषय के प्रथम उपाध्याय आर्नेस्ट ग्रुव नियुक्त हुए थे। लोगों

को इस सम्बन्ध में परामर्श देते-देते वह इस विषय के प्रामाणिक विद्वान् हो गए। १९२४ में नार्थ कैरोलीना विश्वविद्यालय ने अपने यहां इस विषय को आरम्भ करने के लिए प्रो० अर्नेस्ट ग्रुव को आमन्त्रित किया। हाल ही में जांच करने पर पता चला है कि केवल २७ वर्षों मे ही यह विषय वहां अब ५०० से अधिक कॉलिजों तथा विश्वविद्यालयों मे पढ़ाया जाने लगा है। इस विषय की बढ़ती लोकप्रियता का सब से बड़ा प्रमाण यही है कि तुरन्त ही छात्र प्रोफेसरों के पास परामर्श लेने के लिए आने लगते हैं।

न्यूयार्क मे वैवाहिक परामर्श-केन्द्र सब से प्रथम डाक्टर रत्रा स्टोन तथा अब्राहम स्टोन द्वारा खोले गए थे। इनको दो भागों में विभाजित किया गया था—एक विवाहितों के लिए तथा दूसरा अविवाहितों के लाभार्थ। लॉस एंजेल्स में 'अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ़ फैमिली रिलेशन्स' डा० पाल द्वारा स्थापित की गई तथा फिलडैल्फ़िया में इस संस्था की स्थापना सन् १९३२ में हुई। इस विषय में श्रीमती एमली मड (Emily Mudd) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इसके अनन्तर इस विषय की लोकप्रियता अमेरिका भर मे तीव्र गति से बढ़ी। स्त्री-पुरुष के पारस्परिक सम्बन्ध, सन्तानोत्पादन तथा स्त्री-पुरुष की शारीरिक बनावट के भेद भी पारिवारिक शिक्षा के अन्तर्गत ले लिए गए। इसमें डाक्टरों, धर्म-शिक्षकों, सामाजिक शिक्षा-विशेषज्ञों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बहुत बड़े पैमाने पर भाग लिया। कुछ ही वर्षों से एक विशाल

सामूहिक परामर्श विभाग की स्थापना 'मार्गरेट सैंगनर रिसर्च ब्यूरो' के नाम से न्यूयार्क में हुई है, जिसका जिक्र पहले किया जा चुका है। यहां विवाह-सम्बन्धी विकारों तथा अन्य समस्याओं के सम्बन्ध में वैज्ञानिक अनुसन्धान किया जाता है।

वैवाहिक परामर्श केन्द्रों के अतिरिक्त और भी संस्थाएं नियमित रूप से यह कार्य कर रही है। उदाहरण के लिए ७०० से अधिक मातृ-पितृत्व शिक्षा के केन्द्र इस विषय की शिक्षा देते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य सन्तति-निरोध तथा सन्तान-सीमा बन्धन की शिक्षा देना है। गुप्तांगों की समस्याओं के सम्बन्ध में ये संस्थाएं सलाह देती है। इस प्रकार इनकी शिक्षा भी केन्द्रों का एक अंग बन जाती है। बहुत सी सामाजिक संस्थाओं ने भी इस प्रकार की सेवा करनी आरम्भ कर दी है।

"विवाह तथा परिवार की राष्ट्रीय संस्था" तथा दूसरी राष्ट्रीय संस्थाएं प्रान्तीय संस्थाओं के सहयोग से सभाएं करती हैं। इन्हीं के तत्वावधान में वैवाहिक तथा पारिवारिक सम्बन्ध की शिक्षा का प्रबन्ध किया जाता है। इनमें से तीन मुख्य संस्थाओं के नाम हैं (१) नैशनल कौंसिल आफ फैमिली रिलेशन्स (पारिवारिक सम्बन्धों की राष्ट्रीय संस्था), (२) ग्रुप कान्फ्रेंस आफ़ कन्जरवेशन आफ़ मैरिज एंड दी फैमिली (विवाह तथा परिवार के स्थायित्व के लिए ग्रुप सम्मेलन), (३) पैंसिलवेनिया स्टेट कालिज आफ़ एन्युअल इन्स्टीट्यूट आन मैरिज एंड होम एडजेस्टमेंट (विवाह तथा गृह-सम्बन्धों के सुधार के लिए पैंसिलवेनिया का राज्य

कालिज)।

देश के बहुत से भागों में ऐसी कान्फ्रेन्सें होती रहती हैं, जहां स्थानीय तथा निकट स्थानों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। यह इस विषय में लोगों की जागृति का चिन्ह है कि वे दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक संख्या में इसमें भाग लेते हैं। इन संस्थाओं का ध्येय विवाह तथा पारिवारिक जीवन को स्थिर बनाना ही है । बढ़ते हुए विवाह-विच्छेद तथा उससे उत्पन्न आर्थिक तथा अन्य समस्याओं से बचने के लिए ये संस्थाये इस बात पर ज़ोर देती हैं कि मित्रतापूर्ण पारिवारिक जीवन ही सामाजिक जीवन का आधार है।

इस दिशा में जो विशेष महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, उसका श्रेय अमेरिकन एसोसियेशन आफ मैरिज कौंसिल को है। यही एक ऐसी राष्ट्रीय संस्था है. जिसने कि विवाह तथा पारिवारिक परामर्श को न केवल समाज के लिए उपयुक्त वरन् वैज्ञानिक नियन्त्रणों के रूप में पहिचाना है ।

पारिवारिक सम्बन्धों के बारे में खोज में भी काफी प्रगति हुई है। कुछ उल्लेखनीय खोजें (१) जानवरों के लैंगिक सम्बन्ध तथा (२) मनुष्यों के लैंगिक सम्बन्धों के रहस्य के बारे में है। मनुष्यों के गुप्तागों के विषय की खोज इण्डियाना विश्वविद्यालय के प्रो० एलफ्रेड कैंसी ने की है। उन्होंने हज़ारों स्त्री, पुरुषों व बालकों के गुप्तांगों का इतिहास प्राप्त किया । उन्होंने अपनी रिपोर्ट लिखने से पहले एक लाख व्यक्त्यिों का लिंग-सम्बन्धी इतिहास एकत्र करने का प्रयत्न किया । इनकी खोज की रिपोर्ट सन् १९४९ के

प्रारम्भ में ही निकली थी। मेरीलैंड विश्वविद्यालय के डा० शैंक्वल के पारिवारिक संबंध के सैमिनार में छात्र डा० किंज़ी रिपोर्ट (Kinsey-Report) पर अपना मन्तव्य प्रकट कर रहे थे। वहां के कुछ छात्रों का मन्तव्य था कि इस रिपोर्ट में मि० किंज़ी ने उन पुरानी सभ्यताओं को जहां ब्रह्मचर्य यानी आत्म अथवा व्यक्तिगत नियन्त्रण पर भी ज़ोर दिया जाता है, बिल्कुल स्थान नहीं दिया है। अमेरिका मे ब्रह्मचर्य का कोई महत्व नहीं रहा है। पूछने पर मुझे कहना पड़ा कि दैनिक जीवन मे भारतीय आत्मनियन्त्रण का कितना प्रयोग करते हैं, यह तो मैं नहीं बता सकती। शायद सामाजिक नियन्त्रण न होने पर वहां की अवस्था भी ऐसी हो। परन्तु भारत मे समय-समय पर जन्म लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा महात्मा गांधी जैसे महान् व्यक्ति इस ओर लोगों का ध्यान अवश्य आकर्षित करते रहे हैं, तथा हमारे देश मे ऐसा जीवन आदर की दृष्टि से देखा जाता है। परन्तु अमेरिका के नेतृत्व में अनुकरणीय आदर्श जीवन अथवा ऐसे विषयों के नेतृत्व का अभाव मैं भी अनुभव करती हूँ। वहां की एक छात्रा का कथन था कि अमेरिका का समाज एक नया समाज है। उनके सामने प्राचीन उदाहरण नहीं हैं। वे नूतन मार्ग की खोज में संलग्न हैं। उसके इस कथन में कुछ सत्य अवश्य है, परन्तु जो बात आज अमेरिका में देखी जाती है वही पश्चिमी सभ्यताओं में भी परिलक्षित होती है। ये सभ्यताएं नई नहीं कही जा सकतीं। मेरे विचार में तो कोई समाज कितना भी नया हो तब भी वह अपने साथ कुछ पुरातन आदर्श

अवश्य जाता है।

यह निश्चय हुआ था कि डा० कैंजी की स्त्रियों के विषय में दूसरी रिपोर्ट १९५० के अन्त तक छप जायगी। यद्यपि १९५० के अन्त तक मैं न्यूयार्क (कोलम्बिया विश्वविद्यालय) मे ही थी, परन्तु मैं इस बात से अनभिज्ञ रही कि दूसरी रिपोर्ट उस वर्ष छप कर तैयार हो सकी या नहीं।

वैवाहिक जीवन की सफलता के कारणों की खोज

इस विषय के अन्य पहलुओं की खोज भी बहुत से केन्द्रों में हो रही है, जिसमें मार्गरेट रिसर्च ब्यूरो, मिल बैंक फेडरेशन तथा कतिपय विश्वविद्यालय मुख्य भाग ले रहे हैं।

विवाह तथा वैवाहिक सम्बन्ध, मातृ-पितृत्व तथा शिशु-पालन, पारिवारिक तथा पारस्परिक सम्बन्ध के विषय का साहित्य उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है और इस विषय पर उत्तम साहित्य की दिनों-दिन वृद्धि हो रही है।

कुछ वर्षों से रेडियो ने भी इस विषय को अपना लिया है, और अमेरिकन रेडियो परिवार की समस्याओं के सम्बन्ध में दिलचस्पी लेने लगे हैं।

ये सब बातें अमेरिकन जनता तथा शिक्षक वर्ग की इस महत्वपूर्ण विषय की ओर से सचेत होने के लक्षण तथा जागृति के साक्षी हैं। चिकित्सा (Clinical Therapy) की सुविधा को जनता तक पहुँचाने का प्रयास तो विशेषकर प्रशंसनीय है। वास्तव में भारतीय गृहस्थ भी इस समय एक नाजुक स्थिति से गुज़र रहा

है। यह आवश्यक है कि हम अभी से सचेत हो जाएं और अमेरिका के इस सराहनीय प्रयत्न से शिक्षा लेकर अपने देश के पारिवारिक जीवन को छिन्न-भिन्न होने से पहले ही परिस्थिति के अनुरूप बदलना सीख लें।

स्त्रियों को मतदान की शिक्षा

द्वितीय महायुद्ध के बाद से पश्चिमी प्रदेशों की स्त्रिया अपने मत-प्रदर्शन में अधिकाधिक भाग ले रही हैं। इसके फलस्वरूप वहा के समाचारपत्रों को चुनाव के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करने में कठिनाई बढ़ती जा रही है। अमरीका के गत चुनाव में वहां के प्रसिद्ध समाचारपत्रों ने जिस 'रिपब्लिकन' उम्मीदवार के लिए भविष्यवाणी की थी वह झूठी साबित हुई और 'डेमोक्रेटिक पार्टी' के उम्मीदवार श्री ट्रूमन ही प्रेसिडेंट चुने गए। उसी प्रकार इंग्लैंड के इस बार के चुनाव में मजदूर सरकार बहुत ही कम रायों से जीती। इसका कारण 'कन्ट्रोल' नीति के कारण परेशान गृहिणियों का उसके प्रति विरोध बताया जाता है।

पत्रकारों का कथन है कि अब चुनाव का फैसला बहुत-कुछ गृहिणियों के हाथ में है। पहले वे लोग पुरुषों के मतों के भरोसे भविष्यवाणी करते थे। परन्तु आज उनको यह पता लगाना कठिन हो रहा है कि घर में बैठी नारी क्या सोच रही है। वास्तव मे आज की नारी जागृत है और अपना मत-प्रदर्शन करना जान गई है। वहां की व्यापारिक तथा राजनीतिक संस्थाएं इन मतों को प्राप्त करने की अधिकाधिक चेष्टा करती हैं। जब पुरुष अपने कार्यों पर चले जाते हैं और स्त्रियां घर की सफाई आदि करने में लगी होती हैं तब ये संस्थाएं रेडियो द्वारा इनका ध्यान अपनी

ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करती हैं। बहुत-सी व्यावसायिक कम्पनियों का जीवन तो स्त्रियों की 'हां' और 'ना' पर ही अवलम्बित है। अतएव वहां के नारी-जगत् का व्यापारिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में एक अपना स्थान है।

अमरीका की स्त्रियों की आवाज को बुलन्द करने का श्रेय वहां की 'लीग ऑफ़ वीमेन वोटर' (महिला मतदात्रियों की संस्था) को ही है। स्त्रियों के मत को संगठित करने तथा मतदाताओं को अपने अधिकारों के उचित प्रयोग की शिक्षा देने की यह एक अनूठी संस्था है। यह किसी राजनीतिक दल से सम्बन्ध नहीं रखती है। अतएव इसकी सहायता और सहयोग की प्रत्येक राजनीतिक दल को आवश्यकता रहती है।

इस संस्था की नींव १६२० में शिकागो में पड़ी थी। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य स्त्रियों को नागरिक-शिक्षा देना, धारासभाओं में स्त्रियों की उन्नति के कानून पास कराना और मताधिकार के प्रति उन्हें जागरूक करना था।

मैंने इसके न्यूयार्क के दफ्तर का निरीक्षण किया था। इस लीग की प्रधाना उस समय न्यूयार्क से बाहर गई हुई थीं। अतः उपप्रधाना श्रीमती कनिंघम ने इसके कार्यों के भिन्न-भिन्न विभाग दिखलाए और उनके प्रधान कर्मचारियों से परिचय कराया। श्रीमती कनिंघम नित्यप्रति दफ्तर आती हैं और अपनी निःशुल्क सेवाएं लीग को अर्पित करती हैं। इस प्रकार काम करने वाली वहां कई और महिलाएं भी थीं। ये लोग अपना कार्य उसी प्रकार

सुचारु रूप तथा कर्त्तव्य-भावना से करती हैं जिस प्रकार की वेतन प्राप्त करने वाली स्त्रियां।

इस संस्था के सदस्यों की संख्या ४५,००० से अधिक है। यह ६३० समुदायों में विभाजित है। इसका प्रकाशन-विभाग बहुत प्रभावोत्पादक है। इसकी वर्ष में चार बार अपनी पत्रिका निकलती है और एक अर्ध-साप्ताहिक समाचारपत्र। इसके द्वारा सदस्यों को 'लीग' के विचार, कार्यक्रम तथा बनने वाले कानूनों की जानकारी दी जाती है। छोटी-छोटी पुस्तिकाओं में वर्तमान राजनीतिक विषय सन्क्षिप्त तथा स्पष्ट करके स्त्रियों के हितार्थ रखे जाते हैं। इसकी पथ-प्रदर्शक पुस्तिकाएं बहुत सुन्दर और आकर्षक होती हैं। इनके कुछ शीर्षकों के नमूने देखिए—'क्या आपको राजनीति का शौक है ?' 'अपने प्रान्त का ज्ञान प्राप्त करो', 'अपने नगर के भविष्य को समझो', 'आपके राज्य एवं नगर के नेता कौन हैं ?' इत्यादि। इनका मूल्य बहुत ही कम रखा जाता है। तीन डालर वार्षिक मे लीग का पूरा प्रकाशन प्राप्त होता है।

लीग का उद्देश्य स्त्रियों में शासन की जानकारी दिलाना तथा राजनीतिक उत्तरदायित्व पैदा करना है। दिन-प्रतिदिन इसका कार्यक्षेत्र बढ़ता जा रहा है। जनता के हितार्थ सरकारी योजनाओं में 'लीग' सक्रिय योग देती है। परन्तु किसी राजनीतिक दल का खंडन-मडन नहीं करती। हां, इसके सदस्यों को इस बात की छूट है कि वे अपनी मरजी के दल में व्यक्तिगत रूप से भाग लें।

यह संस्था संयुक्त-राष्ट्र संघ के आदर्शों की समर्थक है। अणु-

शक्ति पर प्रतिबन्ध लगाने की आवाज सब से पहले इसी संस्था ने बुलंद की थी। जहां तक लीग के व्यय का सम्बन्ध है उसकी आय पर्याप्त है। प्रकाशन-विभाग की बिक्री से इसे बहुत लाभ होता है। इस विभाग के ३ डालर वार्षिक देने वाले ४,००० सदस्य हैं। १९४८ में इस विभाग से लीग को ३१,५०० डालर का लाभ हुआ। इसके अलावा सहायकों एवं समर्थकों से आर्थिक सहायता मिलती है। अमरीका का बहुत-सा रुपया वहां की वृद्ध स्त्रियों के हाथ में है। सम्पन्न वृद्धाएं मृत्यु के पहले अपनी सम्पत्ति का बहुत-सा भाग लीग के कार्यों के लिए दान दे जाती हैं। वास्तव में यह लीग के सदस्यों की निःस्वार्थ सेवा तथा लीग के सुन्दर कार्य-संगठन का ही परिणाम है कि जनता उसकी रुपये से सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझती है।

प्रौढ़-शिक्षा तथा जन-सेवा की तो 'लीग' एक जीवित तथा अद्वितीय संस्था है। अपनी छोटी-छोटी टुकड़ियों द्वारा देश के कोने-कोने में वह पहुँचती है। क्या ही अच्छा हो जब कि हमारे देश की गृहस्थ स्त्रियां भी अपना थोड़ा समय समाज-सेवा में व्यय करके इस प्रकार की संस्थाएं स्थापित करें। मताधिकार प्रयोग एवं नागरिकता की शिक्षा की आज हमारे देश में कितनी अधिक आवश्यकता है?

थोड़ी पूंजीवाली गृह-निर्माण योजनायें

संयुक्त राष्ट्र ऑफ अमेरिका मे सब से पहले कम पूंजी वाली गृह-निर्माण योजना देखने का सुअवसर मुझे न्यूयार्क में वहा की नीग्रो बस्ती हारलेम (Harlem) में प्राप्त हुआ था। मुझे बताया गया था कि वहां के रहने वालों की संख्या प्रति गृह एशिया के किसी भी घनी जनसंख्या वाले देश से भी अधिक है। यद्यपि जो घर उन्होंने हम लोगों को दिखाये थे उनसे उपयुक्त कथन की पुष्टि नहीं होती थी, परन्तु सम्भव है कि हम लोगों को बहुत ग़रीब लोगों के घरों में न ले जाकर केवल इस कथन द्वारा निर्देश कर देना ही पर्याप्त समझा हो। न्यूयार्क नगर आज सारे संसार की राजधानी बना हुआ है। यू० एन० ओ० के तथा बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों के कारण दूसरे देशों के लोग वहां एक बहुत बड़ी संख्या में आये हुए हैं। हारलेम में न केवल नीग्रो परन्तु दूसरे देशों के अधिकतर ग़रीब लोग भी यहीं निवास करते हैं। अतः यहां स्थान की इतनी तंगी होना आश्चर्यजनक नहीं। यहां "मैट्रोपॉलिटन इन्श्योरेंस" कम्पनी के मैनेजर ने हमें बताया कि उनकी कम्पनी ने किस प्रकार गृह-निर्माण की समस्या को दूर करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने हमें कई-कई मंजिल ऊंची इमारतें दिखाईं जो कि इंश्योरेंस कम्पनी ने अपनी पूंजी से बनाई थीं और जहां बालकों और प्रौढ़ों के खेलों की तथा शिक्षा

व आराम की भी पूरी सुविधा का ध्यान रखा गया था। इस कम्पनी ने इन ब्लाकों मे छोटे-छोटे फ्लैट से लेकर एक कमरे वाले मकान तक बनाये थे। इन सुन्दर मकानों के कम-से-कम पूंजी वाले लोग भी खुद मालिक बन जायें यही कम्पनी का मकान बनवाने का उद्देश्य है। इन छोटे-छोटे फ्लैटों व कमरों की कीमत इस प्रकार से आंकी गई है कि जिन्हें कोई भी गृहस्थ थोड़ी बचत से खरीद सकता है। यदि अकेला मनुष्य है तो आजीवन उसका कमरा अपना कमरा रह सकता है। यह मकान छोटी-छोटी किश्तों में रुपया देने से भी उनके हो सकते है और उनको अपने घर का अधिकार व सन्तोष दोनों प्राप्त हो सकते है। परन्तु मेरी समझ में केवल यही बात नहीं आई कि इन कम्पनियों की शाखायें तो सारे संसार में फैली हैं फिर हमारे देश में ऐसी योजनाओं को फैलाकर उन्होंने लोगों से कृतज्ञता तथा सरकार का सहयोग क्यों न प्राप्त किया।

दूसरी योजना मैंने अपने भ्रमण में यूनाइटेड-स्टेट्स के दक्षिण में नीग्रो यूनीवर्सिटी टस्कगी इंस्टीट्यूट में देखी। यहां के नीग्रो-निवासी का स्तर सारे देश से नीचा है। दक्षिण में रेल द्वारा यात्रा करते समय इनके टूटे-फूटे व पुराने मकान दूर से 'ट्रेन' खेतों में बने दृष्टिगोचर होते हैं। जैसे कि मुझे पूरे देश के भ्रमण में किसी और स्थान व प्रदेश में नहीं दिखाई दिये। गर्मियों के अवकाश के कारण बहुत से विभाग इस विश्व-विद्यालय के बंद थे परन्तु, यहां के इंडस्ट्रियल-विभाग व शिक्षा-

विकास-सेवाओं का कार्यक्रम चल रहा था। यहां मेरा परिचय मि० कैम्पवैल से हुआ। आपके ही बचपन में नीग्रो को दासता से मुक्ति मिली थी और आप उन इने-गिने लोगों में से है जिन्होंने बूकर वाशिंग्टन के समय मे यहां पढ़ा था तथा इस यूनिवर्सिटी के निर्माण में पूरा सहयोग दिया था। आप ही सब से पहले नीग्रो थे जिन्हें केन्द्रीय सरकार ने अपनी कृषि-विभाग की सेवाओं के लिये फ़ील्ड-एजेन्ट चुना था। 'School comes Home' पुस्तक से भारतीय भी परिचित है। आपने भारतीय समस्याओं तथा गांधीजी के प्रयोग में विशेष रुचि दिखाई और कहा, 'क्या ही अच्छा होता यदि उनका कुछ साहित्य हम लोगों को भी भारत द्वारा प्राप्त होता। हम लोग इससे नितान्त अनभिज्ञ हैं।' आपने मुझे मि० नील के साथ वहां की कांक्रीट ब्लाक योजना को देखाने भेजा। मि० नील एक उत्साही नवयुवक टस्कगी इंस्टीट्यूट के ग्राम्य जीवन समिति के डायरैक्टर हैं। आप सब से पहले मुझे एक सब से गरीब नीग्रो स्त्री के घर ले गये। यह स्त्री अपने घर के पिछवाड़े खेत से भिंडियां चुन रही थी। मि० नील ने उससे पहले कुशलवार्ता तथा कुछ घरेलू बातें कीं, और पूछा कि उसका पति कहा है और उससे यह मालूम होने पर कि वह खेत पर काम करने गया है मेरा परिचय यह कहकर कराया कि आप एक भारतीय महिला हैं और आपका मकान देखने आई है। क्योंकि मिसेज़ स्मिथ की आर्थिक दशा अच्छी न थी और वह और उनके बच्चे पुराने कपड़े पहने थे, अतः मि० नील का प्रयत्न वार्तालाप

द्वारा बराबर ऐसा रहा कि जिससे उसका ध्यान एक विदेशी को अचानक घर आया देखकर अपनी आर्थिक दशा पर न जाये, विपरीत उसको अपनी आर्थिक दशा सुधारने में उत्साह मिले।

तदुपरान्त श्रीमती स्मिथ ने मुझसे हाथ मिलाया और घर के अन्दर ले गई। मकान में अभी सब खिड़कियों और दरवाज़ों में जोड़ियां नहीं चढ़ी थीं। मकान में थोड़े से पुराने फरनीचर के अलावा अभी परदे इत्यादि कुछ न लगे थे। यह स्पष्ट था कि ये लोग किराया बचाने के लिये ही इतनी जल्दी इस मकान में आगये थे। यह स्पष्ट जाहिर था कि इनकी कोठी में दो सोने के कमरे एक बैठक, एक रसोई तथा स्नानागार व शौचालय था। सामने सुन्दर लॉन था, पिछवाड़े मोटरगराज, बार्न (barn) तथा जानवरों के लिये घर बना था जिसमें श्री० स्मिथ के बड़े पुत्र ने सूअर तथा मुर्गियां पाल रखी थीं। इससे ही सटा सब्ज़ी का खेत था जिसका वर्णन मैं पहले कर चुकी हूं। क्योंकि अमेरिका में ग्रामीण लोगों के घर समीप न होकर अपने-अपने खेतों के पास होते हैं अतः इन मकानों में अन्दरूनी नाली सीवेज (Sewage) को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और प्रश्न पूछने पर कि क्या यहां सीवेज (Sewage) सब के घरों के पास से निकलती है मुझे उत्तर मिला कि उन्होंने एंटिसैप्टिक-सीवेज-सिस्टम (Antiseptic Sewage System) निकाला है जिसको, समुदाय की भलाई के लिये, चलाने का भार कोई गिरजाघर अथवा व्यापारिक फर्म लेती है। समय-समय पर प्रत्येक परिवार १५० डालर सीवेज की सुविधा प्राप्त करने के

लिए इस संस्था को देता है जो कि अमरीका के व्यय के अनुसार अधिक नहीं है।

मिसेज़ स्मिथ के परिवार मे ८ प्राणी थे। उनकी एक लड़की शृङ्गारालय (Beauty Parlor) चलाती थी जिससे कि परिवार को केवल नकद ३०-४० डालर की मासिक आमदनी थी। परन्तु वही परिवार आज एक साफ तथा सुन्दर अर्वाचीन काटेज के मालिक थे जिस मे विजली के सामान से सुसज्जित रसोईघर तथा स्नानागार और शौचालय थे जिनमें की नल और फ्लश की सुविधा भी थी। इस इमारत का खर्च केवल ६०० डालर आया था। जब कि आम तौर पर इसका खर्च २००० डालर से कम न होता। परन्तु यह सम्भव तभी हो सका जबकि इसमें स्थानीय रेता, पारिवारिक श्रम का प्रयोग और टस्कगी इंस्टीट्यूट के सदस्यों द्वारा नि.शुल्क टेक्नीकल राय प्राप्त होती है। मिस्टर नील ने मिसेज़ स्मिथ से विदा ली और उनसे कहा कि उनका नया घर उनके पुराने घर से वहुत अच्छा है और शनैः शनैः उनको सव प्रकार की सुविधायें प्राप्त हो जायेंगी। इसके पश्चात् हमने कुछ और घर देखे जिनकी आर्थिक स्थिति मिसेज़ स्मिथ के परिवार से अच्छी थी। उनकी रसोइयां नूतन विजली के सामानों से सजी थीं। उनकी कोठियां वड़ी थीं, सव प्रकार के सामान मे सुसज्जित थीं तथा अच्छे ढंग से सजाई गई थीं। निःसन्देह उनका फरनीचर सस्ते दामों वाला था लेकिन उसकी वनावट अच्छी थी और देखने में उनके पास सव आराम के सामान थे जिसकी कि

एक परिवार को आवश्यकता हो सकती है । इन सब स्त्रियों को अपने सामान तथा मकान पर अभिमान था और उनके चेहरे पर तृप्ति की चमक थी। मिस्टर नील ने बताया "टस्कगी इन्स्टीट्यूट" कम आय वाले लोगों की समस्या से ३० वर्षों से परिचित थी। कम आय वाली ग्रामीण जनता भी ऐसे ही गन्दे मकानों में रहती है जिसमें कि चूहों तथा दूसरे जानवरों की भरमार रहती है जैसाकि बड़े शहरों के कम आय वालों के मकानों में अक्सर होता है।"

"प्रारम्भ में ही जनरल एजुकेशन बोर्ड ने जो धन दिया था उससे यह प्रत्यक्ष हो गया था कि साधारणतया दक्षिणी अमरीका के किसानों के पास नकद रुपया खरचने के लिए नहीं है अतएव कोई मार्ग ऐसा ढूंढ निकालना होगा जिससे कि मकान बनाने के सामान का खर्चा एकदम कम हो जाय और यथासम्भव ये किसान अपने परिश्रम पर अवलम्बित रहें।" मिस्टर नील ने इस बात पर जोर दिया कि अनुसधान का मुख्य उद्देश्य गरीब किसानों को अच्छे मकान पर्याप्त कराने मे सहायता करना है और यह तभी सम्भव हो सकता था जब कि घर के बनाने के नक्शे को सरल बनाया जाय तथा मकान के निर्माण में स्थानीय वस्तुओं का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जाय। उन्होंने मुझे लकड़ी के ऐसे ब्लाक दिखाये जो कि कोई भी आदमी थोड़ी सी बढ़ई गीरी जानने पर बना सकता है। लकड़ी के ऐसे ढांचे जिनसे कि १०० ब्लाक तैयार हो जायं कोई भी किसान

एक दिन में बना सकता है । ये मट्टी के ब्लाक १ घंटे में १० बन सकते हैं। एक ऐसा आदमी जिसने पहले यह काम कभी न सीखा हो वह जल्दी ही ढाचा बनाना, मसाला मिलाना तथा ब्लाक बनाना सीख जाता है। 'टस्कगी इंस्टीट्यूट' के मकान बनाने में विशेषज्ञों की आवश्यकता केवल कोने बनाने, छत्त डालने तथा नाली व चिमनी बनाने में पड़ती है।

मि० नील 'कम कीमत के मकान' वाले बुलेटिन मे इस बात पर बहुत जोर देते हैं कि 'टस्कगी कांक्रीट ब्लाक' न केवल कम दाम का ही है वरन् वास्तव मे नकद कम कीमत का है। किसान अपने परिश्रम व रेत से ब्लाक बनाकर रेत व परिश्रम के दाम नकद बचा लेता है। इसके अलावा यहां किसान सारे वर्ष खेती नहीं करते हैं। उनके पास कई महीने अवकाश के रहते हैं। अतः यह उसकी जमीन की रेत तथा अपने परिश्रम का ही फल है जो कि गृह-निर्माण मे उसके खर्च को कम कर देता है। विशेष टेक्निकल सम्मति इन्हे 'टस्कगी इंस्टीट्यूट' द्वारा निःशुल्क प्राप्त होती है।

सब से अधिक क्रियात्मक लाभ इस ब्लाक से यह है कि इसे सब प्रकार की आय वाले लोगों की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित किया जा सकता है। अब ऐसे परिवार को कि जिसके पास धरोहर रखने को कोई वस्तु न हो बिना मकान के रहना आवश्यक नहीं। लकड़ी के ढाचे तथा मट्टी के ब्लाक बनाने में केवल परिवार के परिश्रम की आवश्यकता है। जब कभी रुपया हाथ में

न हो काम बड़ी आसानी व बिना नुक्सान के तब तक रोका जा सकता है जब तक कि फिर रुपया हाथ में न आजाये। इन्होंने यह भी बताया कि ब्लाक अन्दर से खोखले होने का एक बहुत बड़ा लाभ यह भी है कि ये गरमी में ठंडे व जाड़े में मकान को गरम रखते हैं। अर्थात् सर्दी व गर्मी दोनों की अधिकता को रोकते हैं।

"सहकारी गृह-निर्माण (Co-operative) योजनाओं वाले समूह भी टस्कगी कांक्रीट ब्लाक का सदुपयोग कर सकते हैं। एक ब्लाक-क्षेत्र किसी केन्द्रीय स्थान में स्थापित किया जा सकता है और कांक्रीट बनाने वाली मशीन किराये पर ली जा सकती है। एक बड़ी मशीन २५ ब्लाक प्रति घंटे के हिसाब से बना सकती है तथा १२ मनुष्य उसे अच्छी प्रकार चालू रख सकते हैं। १५ घंटे में इतने ब्लाक अच्छी प्रकार निकल सकते हैं कि चार कमरों वाला पूरा मकान तैयार हो जाये और इस प्रकार सहकारी गृह-निर्माण योजना वाली संस्थायें इससे पूरा लाभ उठा सकती हैं।"

उनको इस बात का अभिमान है कि जब १६४६ में यूनाइटेड स्टेट-कांग्रेस में गृह-निर्माण का कानून पास किया था और ग्रामीण लोगों के गृह-निर्माण के कार्य को भी इसमें सम्मिलित किया था उस समय उन दो नीग्रो किसानों ने जिन्हें सब से पहले इस मद्ध से कर्ज़ा मिला था 'टस्कगी कांक्रीट ब्लाक' का ही प्रयोग किया था और इसी इंस्टीट्यूट विशेषज्ञों से राय ली थी। केन्द्रीय सरकार ने भी इस बात को माना है कि कम खर्च के मकान बनाने में

वास्तव में टस्कगी इंस्टीट्यूट के ये ब्लाक एक देन है।

टस्कगी इंस्टीट्यूट अमरीका के नीग्रो लोगों का सबसे पुराना व प्रसिद्ध विश्व-विद्यालय है। इसकी स्थापना १८८५ में बूकर टी वाशिंग्टन द्वारा हुई थी। इन्हीं महापुरुष ने अपने साथी नीग्रो के मुख से अज्ञान का पर्दा हटाने का सर्वप्रथम तथा सफल प्रयास किया था। इस संस्था का अमरीकन नीग्रो का नैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्तर ऊंचा करने में बहुत बड़ा हाथ है तथा प्रत्येक अमरीकन नीग्रो को इस पर गर्व है। यह वह संस्था है जो कि उनके स्वप्न को वास्तविक जगत मे उतार लाई। बूकर टी वाशिंग्टन प्रत्येक नीग्रो के लिये चाहते थे कि उनके पास हो—एक मकान और जमीन का एक टुकड़ा जिसे वे अपना कह सकें।

मनोरंजन-सम्बन्धी संस्थाएं

ससार के सभी सभ्य व उन्नत देशों में खेलों का महत्त्व स्वीकार किया जाता है। खेल और मनोरंजन का महत्व आज बालकों के जीवन तक ही सीमित न रहकर प्रौढ़ लोगों के व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में भी प्रवेश कर गया है। रचनात्मक तथा प्राकृतिक खेल मनुष्य जीवन को पूर्ण बनाने के आवश्यक अंग माने जाते हैं। मनुष्य के भावों और सामाजिक रचना के अनुशीलन के बाद यह समझा जाने लगा है कि खेल केवल प्रमोद के साधन ही नहीं है, मानव जीवन में भी उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

"कोई भी कार्य, जो व्यक्तित्व विकास की सीमा का उल्लंघन करके अनुशासन की सीमा में आजाय, उसे प्रमोद न समझ कर 'कार्य' समझा जाना चाहिए।" यह मि० टेलर का मत है। उनका यह भी कथन है कि "जहां कार्य करने तथा कार्य के विकास की स्वतन्त्रता हो, वही वास्तव में प्रमोद है।" व्यक्तित्व के विकास के लिए यह अति आवश्यक है। परन्तु मनोरञ्जन में आमोद-प्रमोद के साथ-साथ खेल का भी रचनात्मक विकास होता है। वास्तव में यह न केवल जीवन के भग्न तारों को जोड़ता है, अपितु जीवन में एक नई सृजन-शक्ति भी उत्पन्न करता है। इसका सब से प्रथम

और मुख्य तत्व आराम (रिलेक्सेशन) है । इसके दूसरे और तीसरे मुख्य तत्व यह है कि इसका विकास क्रियाशक्ति द्वारा होता है, जिसके करने का जोश आमोद-प्रमोद द्वारा ही प्राप्त होता है और इसमे रचना, पुनर्रचना, सृजन तथा पुनःसृजन की शक्ति विद्यमान हैं।

परन्तु मनोरञ्जन के महत्व को समझते हुए भी ऐसे देश बहुत कम है, जिन्होंने इस सम्बन्ध मे कोई विशेष कार्य किया हो। इसी सदी के आरम्भ मे अमेरिका के लोगों ने यह अनुभव किया था कि नगरों, छोटे शहरों तथा ग्रामो मे सिनेमा-घर के अलावा अन्य मनोरञ्जन का नितान्त अभाव है। परन्तु आज वहां के नगरों से लेकर छोटे-छोटे ग्रामों तक सभी मे मनोरञ्जन के साधन मौजूद हैं। इसके विकास में ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित प्रोग्राम भी सम्मिलित हैं। आज तो वहां की धार्मिक संस्थाओं का खाली समय व्यतीत करने का ढंग भी बदल गया है। परन्तु गांवों के गिरजाघरों के पास धन का अभाव उनकी इस कार्य-योजना में बाधक है। अमेरिका का कन्सौलिढेटेड स्कूल हजारों ग्राम निवासियों तथा उनके जातीय समूहों को मनोरंजन केन्द्र देता है। कन्सोलिडेटेड स्कूलों के बड़े-बड़े हाल तथा मैदान नाटक, सिनेमा तथा व्यायाम आदि के लिए बनाए हैं। इनके मनोरंजन के कार्य के संचालन तथा उनकी देखभाल के लिए अलग-अलग व्यक्ति नियत हैं, जो मनोरंजन केन्द्रों में आराम के समय का उपयोग सामाजिक कलाओं द्वारा करते हैं। दिन-प्रति-दिन अधिक से

अधिक संख्या मे नवयुवक, नवयुवतियाँ तथा प्रौढ़ इसमें भाग लेते हैं। इनके अपने बैंड-बाजे भी हैं, जो ग्रामनिवासियों के विशेष आकर्षण की वस्तु हैं। सहकारी ग्राम्य समितियां इनकी सफलता में विशेष दिलचस्पी लेती हैं।

यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र में आज खेती का काम वैसा कठिन तथा बोझल नहीं रहा है, जैसा कि आज से ५० वर्ष पूर्व था। खेल-कूद को आज समय बर्बाद करनेवाला न समझा जाकर व्यक्तित्व-विकास तथा समाज-रचना का अंग माना जाने लगा है। अनेक संस्थाएं वहां इस क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। ये अधिकतर ऐसे सामान व साधनों का ही प्रयोग करती है, जो कि समीप ही उपलब्ध हों। आज के अमेरिकन स्कूलों में खेल का वही महत्त्व है, जो कि पठन-पाठन का है। इसके दोनों मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व तथा समाज का विकास सभी प्रकार के लोगों के लिये आवश्यक हैं। फिर ग्राम्य जनता इससे अछूती क्यों रहती ?

अमेरिका के गांवों में सब से पहले रेडियो ने अपना रंग जमाया। पिआनो, फोनोग्राफ और चित्रपट (सिनेमा) का नम्बर तो खेल-तमाशों के भी बाद आता है।

मनोरंजन मे भाग लेने वाली संयुक्त राष्ट्र की मुख्य-मुख्य संस्थाएं हैं : नैशनल रीक्रिएशन एसोसिएशन; एग्रीकल्चर एक्सटेंन्शन सर्विस (ग्राम विकास सेवा); कन्सौलिडेटेड स्कूल; कैंप फायर गर्ल्स; वाई० एम० सी० ए०, तथा वाई० डब्ल्यू० सी० ए०। इनमें सब से प्रथम स्थान नैशनल रीक्रिएशन एसोसिएशन का है।

केन्द्रीय सरकार द्वारा सहायता प्राप्त करनेवाली प्रमुख संस्थाएं हैं : एग्रीकल्चर एक्सटैन्शन सर्विस (कृषि विकास), फिश एण्ड वाइल्ड लाइफ सर्विस (मछली तथा जंगली जीवन की सर्विस), दि युनाइटेड स्टेट फौरेस्ट सर्विस (संयुक्त राष्ट्र की जंगल की सर्विस) तथा नैशनल पार्क सर्विस (राष्ट्रीय उद्यान सर्विस)। इन सब के अपने-अपने मनोरंजन के प्रोग्राम हैं। एग्रीकल्चर एक्सटैन्शन सर्विस ने २७,००० ग्राम्य समूहों के मनोरंजन के प्रोग्रामों में क्रियात्मक सहायता दी, तथा १,००० से अधिक स्वयंसेवकों को इस क्षेत्र में ट्रेनिंग दी।

'दि फिश एण्ड वाइल्ड लाइफ सर्विस' जंगली जानवरों के जीवन की सुरक्षा के लिये प्रयत्न करती रहती है, जिससे कि वह मछली पकड़ना, शिकार खेलना आदि ग्रामीण जीवन के प्राचीन मनोविनोदों को पुनः लोकप्रिय बना सके।

राष्ट्रीय जंगलों ने १,८०,००० एकड़ भूमि लोगों के मनोरंजनार्थ घेर रखी है, जहां कि २,००,००० से अधिक व्यक्ति प्रति वर्ष पिकनिक आदि द्वारा लाभ उठाते हैं। ३,००० से अधिक स्थान कैंप लगाने व पिकनिक के लिए सुरक्षित है। ५०,००० एकड़ भूमि जाड़ों के खेलों के लिए अलग रख दी गई है। इन जंगलों व बागों में मोटर चलाने, हाइकिंग तथा और खेलों का भी प्रबन्ध है। २७० नैशनल पार्क हैं, जहा प्रति वर्ष १,००,००,००० से भी अधिक व्यक्ति ऐतिहासिक इमारते देखने जाते हैं। इनमें अकसर चिड़िया-घर भी स्थापित हैं। ये पार्क तथा सुरक्षित जंगल संयुक्त राष्ट्र के
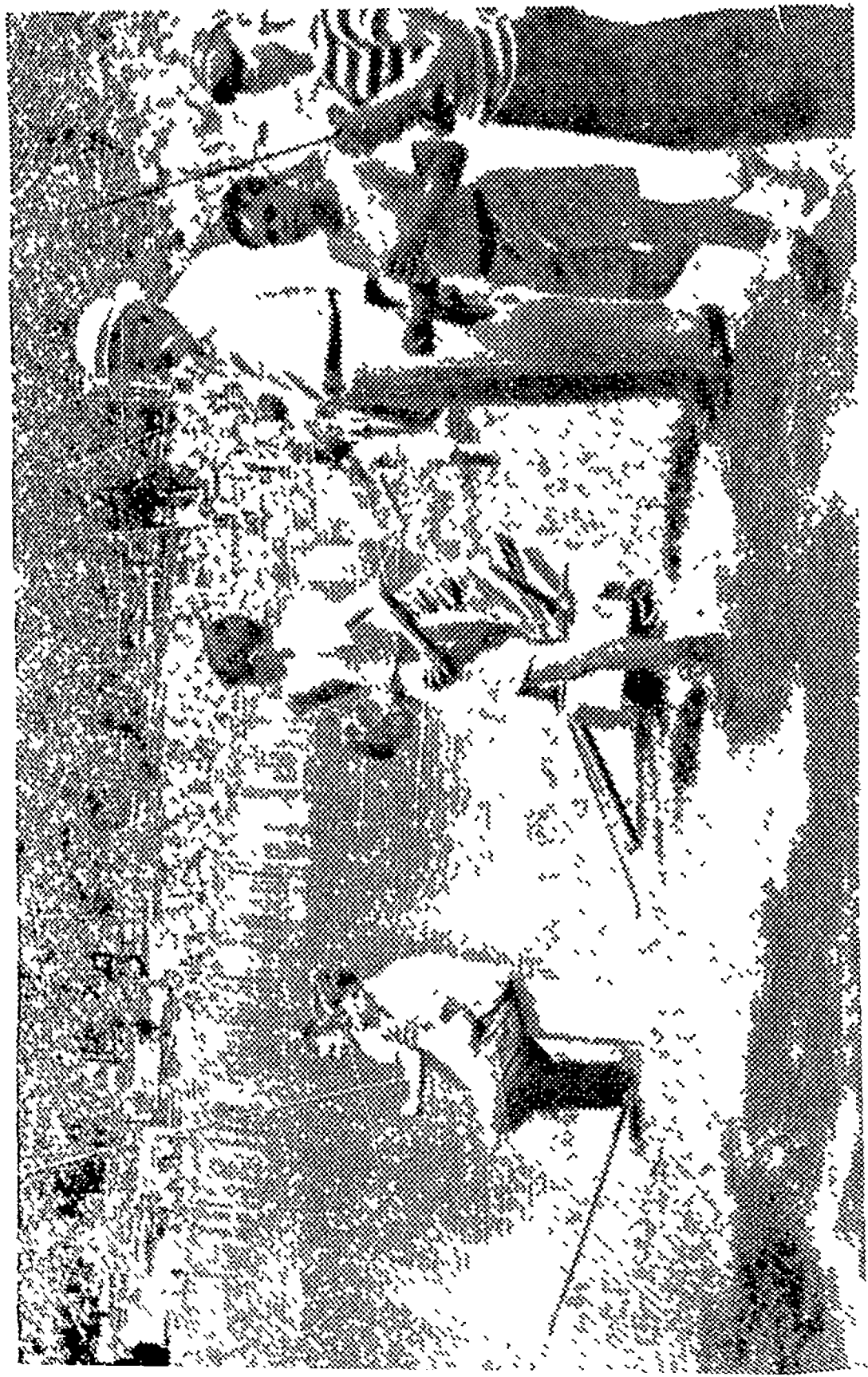
मछली पकड़ने के प्राचीन उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिये स्थान २ पर विशेष तालाबों का आयोजन किया गया है ।

नैशनल पार्क मे एक परिवार पिकनिक कर रहा है ।

सब से सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों से पूर्ण हैं। संयुक्त राष्ट्र के प्रत्येक राज्य में लोगों के मनोरंजनार्थ बाग, जंगल, तैरने के तालाब तथा खेल-कूद व नाटकों के लिए खुले रंगमंच (ओपन एयर थियेटर) बनाए जाते हैं। इस प्रकार निःशुल्क तथा अति सुन्दर मनोरंजन की ये सेवाएं छोटे-छोटे नगरों व ग्रामों में गरीब लोगों को भी प्राप्त हैं। इसका असली आभास मुझे नोक्सफिल के पास रैड इंडियनों के लिए सुरक्षित चरकी के पहाड़ों में जाकर हुआ। यहां के नैशनल पार्क में पहाड़ियों से घिरा एक खुला और विशाल नाट्य-गृह है, जिसमें हजारों आदमी एक साथ बैठकर नाटक देख सकते हैं। इस सुन्दर ओपन एयर थियेटर में मुझे रैड-इंडियनों तथा यूरोपियन विदेशियों के संग्राम का अति सुन्दर ऐतिहासिक नाटक देखने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

नैशनल रीक्रिएशन एसोसिएशन सभी राज्यों के कितने ही महकमों के सहयोग से काम कर रहा है, जैसे—पार्क, जंगल, सुरक्षा, शिक्षा तथा कृषि विभाग। कभी-कभी तो इसके पांच-पांच व्यक्ति एक साथ केन्द्रीय सरकार की ग्राम्य मनोरंजन विकास सेवाओं में कार्य करतें देखे जाते है। सारे देश मे एक हजार से भी अधिक प्रशिक्षण केन्द्र नैशनल रीक्रिएशन एसोसिएशन द्वारा स्थापित हैं। साथ ही दो हजार से भी अधिक संस्थाओं का संचालन इसी एसोसिएशन ने किया है। इसका मुख्य उद्देश्य ऐसे सब प्रकार के लोगों को मनोरञ्जन क्षेत्र के नेता बनने की शिक्षा देना है, जो कि ग्रामों से सम्बन्धित संस्थाओं की सहायता करते

हैं। एसोसिएशन का अपना छपाई का विभाग भी है, जिसमें छोटी-छोटी ऐसी पुस्तकों की छपाई होती है, जो इस क्षेत्र की समस्याओं को सुलझाने के अलावा जनता को लोकगीत, नृत्य तथा नाटक व खेल-कूद के प्रोग्राम के चुनाव मे सहायता दे सकें। 'रूरल रीक्रिएशन' (ग्राम्य मनोरञ्जन) नाम का एक मासिक पत्र भी इस एसोसिएशन की ओर से निकलता है। इसमें कुछ स्थायी स्तम्भ हैं : पिकनिक, कैम्पिग, गाने वाले खेल, हॉकी, बालकों की पार्टियां, गेंद के खेल, प्राचीन खेल, लोक-गान व नृत्य, पेजैंट, बैंड, गृहोद्योग, प्रदर्शिनी, सामूहिक खेल तथा प्रतियोगिता।

एसोसिएशन का केन्द्रीय विभाग न्यूयार्क मे स्थापित है। इसे देखकर ही मैं इसका क्षेत्र - विकास समझ पाई। संस्था के डायरेक्टर ने मुझे इसके उद्देश्य व इसके विशाल क्षेत्र से परिचित कराया तथा मुझसे यह आग्रह किया कि मैं भारतीय मनोरञ्जनों के सम्बन्ध में एक लेख उनके पत्र मे दूं।

सब से पहले १६०७ मे 'प्ले ग्राउंड एसोसिएशन' (क्रीड़ा मैदान संघ) के नाम से एक संस्था स्थापित हुई थी। थियोडोर रूज़वैल्ट इसके प्रथम सभापति थे। परन्तु न्यूयार्क में दूसरी संस्था का स्थापना १६२६ में हुई। इसने अपनी १५वीं वर्ष गांठ ह्वाइट हाउस में, प्रेज़ीडैंट हरबर्ट हूवर के निमन्त्रण पर मनाई।

देश के शहरों में बालकों के खेलने के लिए प्रायः पर्याप्त स्थान नहीं होता, अतः सब से पहले इस संस्था ने बालकों के लिए ऐसे स्थान तथा सुअवसर देने का प्रबन्ध किया। उसके पश्चात् यह

संस्था अपना कार्य क्षेत्र बढ़ाती गई। सन् १९५० में अमेरिकन नवयुवक-नवयुवतियों, प्रौढ़ तथा बूढ़ों के मनोरंजन के लिए इस संस्था ने २६,२९,११,९५७ से भी आर्थिक डालर (एक अरब से भी ऊपर रुपया) मनोरंजन के क्षेत्र में व्यय किए। उस वर्ष ५८,००० से भी अधिक कार्यकर्ता तथा १,००,००० स्वयंसेवक इस संस्था के अधीन कार्य करते थे। इनका विचार था कि अभी अमेरिका में इसकी सेवाओं के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र विद्यमान है। यह संस्था हमेशा उतना ही व्यय करती है, जितनी कि इसकी आय होती है। अतः इसने कभी घाटा नहीं उठाया।

जिस गांव के लोग चाहते हैं, वहां इस संस्था के कार्यकर्ता मनोरञ्जन के लिए मैदान का प्रबन्ध, इमारत तथा खेलों के लिए सुविधाओं का प्रबन्ध करने तथा उनके विकास में सहायता देने के लिए जाते हैं। नेतृत्व की शिक्षा तथा परामर्श की सेवाओं का संचालन इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। नाटक के पात्र, गान, नाटक की लिपि, नृत्य, बैले (Belle) आदि सभी के आ-योजन और संगठन में यह संस्था पूरी सहायता, सहयोग और सलाह देती है। अगर कोई चाहे तो चिट्ठी-पत्री द्वारा भी परामर्श दिया जाता है।

आज इस संस्था का क्षेत्र केवल राष्ट्रीय सेवा तक ही सीमित न रहकर अन्तर्राष्ट्रीय बन गया है। गत वर्ष इस संस्था ने अपने डायरेक्टर मि० रिवर्ज़ तथा उनकी धर्मपत्नी को अन्तर्राष्ट्रीय मनोरञ्जन मिशन के उद्देश्य से जापान की रीक्रिएशन एसोसिएशन

कांग्रेस में सम्मिलित होने भेजा था। भारत व जापान के अलावा रिवर्ज़ दम्पति ने पुर्तगाल, स्पेन, इटली, ग्रीस, इजिप्ट, लैबनान, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान, थाइलैंड, चायना, फिलीपाइन्स, हवाई का भी दौरा किया है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर से लेकर अनेक व्यक्तियों ने हमारे देश का ध्यान मनोरञ्जन की राष्ट्रीय महत्ता की ओर आकर्षित किया, परन्तु अभी तक हमारे देश में कोई भी संस्था इस क्षेत्र में ऐसी नहीं दिखाई देती, जिसे वास्तव में राष्ट्रीय कहा जा सके। मि० टी० ई० रिवर्ज़ (T. E. Rivers) के भारत आगमन ने एक बार फिर लोगों का ध्यान इस ओर खींचा है।

सार्वजनिक पुस्तकालय तथा प्रौढ़ शिक्षा

यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका ने पुस्तकालय विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति की है तथा यह वहां साहित्य का एक अंग भी बन गया है। यहां के लोगों का यह विश्वास है कि प्रारम्भिक तथा माध्यमिक निःशुल्क शिक्षा का सुअवसर जैसे यहां के देशवासियों को प्राप्त है वैसे ही सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा निःशुल्क पुस्तकों का सुअवसर भी उनको प्राप्त होना चाहिए। इसी आधार को लेकर उन्होंने अपने सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा जनता की सेवा का एक नया मार्ग निकाला है; जिसके कारण पुस्तकालय विज्ञान ने यहां इतनी उन्नति की है।

संयोगवश मुझे अमरीका पहुँचते ही वहां के सब से बड़े सार्वजनिक पुस्तकालय (Library of Congress) से परिचय हुआ। इसकी संगमरमर की सुन्दर, भव्य तथा विशाल इमारत को देखकर मैं अत्यन्त ही प्रभावित हुई। वास्तव में इतनी बड़ी व सुन्दर इमारत अपने अमरीका के भ्रमण में कोई दृष्टिगोचर नहीं हुई। इसके अन्दर पुस्तकों का संग्रह तथा उतना सुन्दर ही वाचनालय (Reading room) है। यह अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में स्थित है और मेरीलैण्ड यूनिवर्सिटी से केवल दस मील की दूरी पर होने के कारण वहां के सभी छात्र इसका फ़ायदा उठाते हैं। इसके बृहद् पुस्तकालय में लाखों की

संख्या मे सब देशों के महत्वपूर्ण विषयों पर पुस्तकें मिलती हैं। ये पुस्तकें नीचे तहखानों में संगृहीत हैं और अनेकों कर्मचारी इनके लेने-देने तथा संगृहीत करने मे लगे रहते हैं। इसकी गुम्बद की छत पर सुन्दर काम हुआ है। चारों ओर अमेरिका के प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुरुषों के लेख खुदे हैं। इस गुम्बद के पास की अटारी से नीचे देखने में किताबों की रङ्गीन जिल्दें ऐसी लगती हैं मानो मणि-माणिक जड़े हुए हैं। प्रत्येक व्यक्ति के बैठने के लिए एक कुर्सी व डैस्क व बिजली का लैम्प लगा है। यहां के कमरों का तापमान ६५° पर रखा जाता है जो पढ़ने वालों के अनुकूल रहता है अतः जाड़ों मे न ज्यादा सर्दी और गर्मी मे न अधिक गर्मी होती है। यहां अलमारियों में पुस्तकों के नम्बर, नाम व लेखक के छपे कार्ड रखे रहते हैं, एक विशेष पर्ची पर इन्हें लिखकर और अपने डैस्क का नम्बर लिखने व हस्ताक्षर करने के बाद यह लायब्रेरियन को दे दी जाती है। कुछ पुस्तकें खुली अल्मारियों में होती हैं, उन्हें लोग खुद ले सकते हैं। यदि पुस्तकें उसी मंजिल में न हों तो लायब्रेरियन बिजली से चलने वाली छोटे-छोटे खानों की रेल में पर्ची को रख देते हैं जो उसे नीचे ले जाती है। यह रेल निरन्तर ही बिना रुके कुएं के रहट की तरह ऊपर से पर्ची व लोगों की वापिस की हुई पुस्तकें ले जाने व नई पुस्तकें लाने का कार्य करती है। इस प्रकार पुस्तकें अध्ययन करने वाले के डैस्क पर पहुँचा दी जाती हैं। प्रतिदिन हजारों लोग इन पुस्तकों को देखने व पढ़ने को वहां आते रहते हैं। यहां गाने के रिकार्डों की लायब्रेरी

का कमरा बिलकुल पृथक है । यह साउण्ड-प्रूफ है यानी इसकी दीवार व दरवाज़ों से आवाज़ बाहर नहीं जाती । यहां आप देश के प्रसिद्ध गान व वाद्य विद्या के कलाकारों की कृतियों को सुन सकते हैं। इसी प्रकार छायाचित्र (सिनेमा) दिखाने का बड़ा हाल भी होता है, जहां बड़े-बड़े लेखकों की कृतियों को चित्र मे दिखाया जाता है। विशेष व महत्वपूर्ण विषयों पर लैक्चरों का प्रबन्ध भी किया जाता है। हस्तलिखित पुस्तकें, सिक्के, ऐतिहासिक हस्तलेख तथा प्रसिद्ध चित्र भी संगृहीत होते हैं।

इसके उपरान्त मेरे कोलम्बिया यूनीवर्सिटी में प्रवेश करने पर वहां के पुस्तकालयों की सुन्दर सेवाओं को और नज़दीक से अध्ययन करने को मिला। इस देश में पुस्तकालयों की सेवाएं इतनी सुसंगठित, विशाल तथा विस्तृत हैं कि वे भी उनके पाठ्य का विषय बन गई हैं और उनको संगठित करने के लिए भी पुस्तकालय-विशेषज्ञों की तथा इस विषय से परिचित लोगों की दिन प्रतिदिन मांग बढ़ती जाती है । कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में लायब्रेरी का विभाग अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । यह अपने छोटे-छोटे पैम्फलैट्स छात्रों के लाभार्थ निकालता है तथा छात्रालय के छात्रगण इस प्रकार अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं। कुछ विषयों पर छात्रों के लिए व्याख्यानमालाओं की भी व्यवस्था करते हैं। इनमें कुछ विषय हैं—किस प्रकार भिन्न-भिन्न विषय की पुस्तकों को थोड़े से समय में पढ़कर छात्र लाभ उठा सकते हैं तथा किस प्रकार वे अपने बचपन के उन दोषों को

जिससे कि उनको धीरे पढ़ने की आदत हो गई है दूर कर सकते हैं। यहां पर नई पुस्तकों से विद्यार्थियों को परिचित कराने के लिए नई पुस्तकों के 'कवर' लायब्रेरी में टांग दिये जाते हैं तथा विभिन्न विषयों के प्रोफेसर जो इन पुस्तकों को पसन्द करते हैं उनकी सम्मति भी बोर्डपर लगा दी जाती है जो कि छात्रों को व्यर्थ में पुस्तकों के छांटने के समय को नष्ट होने से बचा देती है। इसके अतिरिक्त अमेरिका के प्रत्येक विश्वविद्यालय व शिक्षणालय मे बालकों को भिन्न-भिन्न विषयों की अच्छे लेखकों की कृति की छपी सूची प्रारम्भ में ही छात्रों के हाथ में दे दी जाती है तथा उनके अध्यापक उनको इस पुस्तक के विषय, शैली व लेखक से भी संक्षेप से परिचित करा देते हैं। इस प्रकार बचपन से ही बालकों को पुस्तकालय का सदुपयोग करना आजाता है।

ये सुविधाएं केवल प्रौढ़ों के लिए नहीं वरन बालकों के लिए भी है। वहां प्रत्येक प्रांत व नगर में सार्वजनिक पुस्तकालय हैं जहा लोग नाम मात्र का शुल्क देकर अथवा मुफ्त भी पुस्तकें पढ़ सकते है। इसमे एक विभाग बालकों की पुस्तकों का होता है। बालक अमरीका में स्कूल के बाद अथवा छुट्टी के दिन अक्सर पुस्तकालकों में आते-जाते दीखते हैं। एक दिन एक नन्ही सी बालिका को औरों के साथ पुस्तकालय जाते देख मुझे आश्चर्य हुआ और मैंने कहा,'मेरी, तुम वहां जाकर क्या करोगी'? बालिका को मेरे प्रश्न से आश्चर्य हुआ और उसने तुरन्त उत्तर दिया, 'पढ़ूंगी' और फिर बगल मे दबी पुस्तक की ओर इशारा करके बताया कि उसे वह

पुस्तक लौटानी भी है। क्योंकि मैं जानती थी कि इतना छोटा बालक पुस्तकें नहीं पढ़ सकता, अतएव मैंने उसकी वह पुस्तक देखनी चाही। मैंने देखा यह तस्वीरों की पुस्तक थो जिसमें चित्रों द्वारा कहानी बनाई गई थी। जब बालिका मेरी इन तस्वीरों और कहानी को अच्छी प्रकार समझ जाती है और अपनी 'मम्मी' को पूरी कहानी सुना देती है तब दूसरी पुन्तक ले आती है।

एक दिन मुझे न्यूयार्क में बालकों की लायब्रेरी में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वहां देखा कि छोटे-छोटे बालक अर्धगोलाकार के रूप में रखी छोटी-छोटी कुर्सियों पर बैठे थे। सामने मैंटल-पीस पर एक तैल-चित्र क्राइस्ट का रक्खा था जिसके दोनों ओर गुलदस्ते रक्खे थे। बीच में एक कुर्सी पर कहानी सुनाने वाली एक महिला बैठी थी। उसके सामने एक मेज़ रखी थी। उसके दायें बाजू की ओर एक बड़ी मेज पर सफेद बड़ी मोमबत्ती रखी थी जिसके दोनों ओर भी गुलदस्ते थे। कमरे के दूसरी ओर कोने में सिनेमा की तस्वीरें दिखाने का परदा टंगा था और एक ओर प्यानो रखा था। उन्होंने बताया यह हमारा कहानी सुनाने का खास कमरा है। इसमें बालक पहले मोमबत्ती जलाकर प्यानों के साथ भजन गाते हैं। उसके पश्चात् मोमबत्ती के सामने करते हैं अपनी-अपनी मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना करते हैं। फिर कहानी प्रारम्भ होती है। कभी-कभी कहानियों का चल-चित्र यानी सिनेमा भी दिखाया जाता है। यहां बालकों की कहानियों, ड्रामों, गानों तथा कविताओं के संग्रह भी हैं। कुछ

बालक अपने मन के रिकार्ड चुनकर चला देते हैं, कुछ पुस्तकें पढ़ते है तथा अन्य तस्वीरें देखते व समाचार-पत्र पढ़ते हैं। रिकार्ड चलने से पुस्तकालय की शान्ति भंग नहीं होती। ये बालक रिकार्ड लगाकर टेलीफ़ोन की सी पोंगी अपने कान मे लगा लेते हैं। इसके द्वारा ये प्रसिद्ध गायकों के गाने, रूपक तथा कहानियां सुनते रहते हैं जिनमें शेर भी दहाड़ते हैं परन्तु पास बैठे साथी को इसका आभास भी नहीं होता। इसके अलावा किसी रूपक को चुनकर खुद ड्रामा भी खेलते हैं। इस प्रकार ये बालक अपने समय को नष्ट न कर उसका सदुपयोग करते हैं। वे हमेशा स्कूल के काम की ही पुस्तकें नहीं पढ़ते। उनकी अपनी हॉबी होती हैं। उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने का पुस्तकालय सब से सीधा व सरल तरीका है। आपको यह जानकर और भी आश्चर्य होगा कि गरीब बालकों के (जिनके घरों में पढ़ने का स्थान नहीं है) पढ़ने की भी यहां व्यवस्था होती है। यहा इस बात की शिक्षा भी दी जाती है कि पुस्तकालय का ठीक प्रयोग कैसे किया जाना चाहिये। आप पढ़ने में तेज्ञ हैं, ठीक हैं अथवा आपके पढ़ने की रफ्तार बहुत कम है इसका भी टैस्ट होता है और आपको कमियों को दूर करने के तरीके भी बताये जाते है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में सब से पहला सार्वजनिक पुस्तकालय ७५ वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। उन्नीसवीं सदी के बाद से जो पुस्तकालय का आन्दोलन फैला है उसका अधिकतर श्रेय एन्ड्रू कार्नीगी (Andrews Carnigie)को है जिनकी उदारता से सैंकड़ों

कैन्टकी स्टेट के वेरिया कॉलेज के दो छात्र (काउण्टर के अन्दर) पुस्तकाध्यक्ष का कार्य करके अपना जीविकोपार्जन कर रहे हैं।

ग्रामीण बालक नाव में आकर चलते-फिरते पुस्तकालय से पुस्तकें प्राप्त कर रहे हैं।

पुस्तकालय तथा इमारतें बनीं। सार्वजनिक पुस्तकालयों में उनकी रुचि का मुख्य कारण उनका शिक्षा में विश्वास था तथा उनको इस बात का विश्वास था कि निःशुल्क पुस्तकों के प्राप्त होने से न केवल आम जनता का ज्ञान ही बढ़ेगा वरन् उनको सची शिक्षा प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

जैसे-जैसे पुस्तकालयों की संख्या तथा पुस्तक पढ़ने वाले लोगों की संख्या बढ़ने लगी वैसे-वैसे ही पुस्तकालयों की विशेष अपनी ही समस्याओं की ओर पुस्तकाध्यक्षों का समय और ध्यान आकर्षित होने लगा। उन्होंने इस बात को महसूस किया कि पुस्तकालय के कर्मचारी जनता की व्यक्तिगत समस्याएं और रुचि की ओर विशेष ध्यान न दे सकने के कारण केवल पुस्तक-वितरण की मशीन बन गये है। बड़ी-बड़ी जगहों पर इस समस्या को दूर करने के लिए उन लोगों ने पुस्तकालय की शाखाएं खोलीं। उन्होंने खुली अलमारी से पुस्तक उठाने की नई विधि को भी अपनाया जिससे कि पाठक को अपने आप किताबें देखने व पसन्द करने का सुअवसर मिल सके, क्योंकि काम बढ़ जाने के कारण कर्मचारियों को जनता से बात करने का सुअवसर नहीं मिलता था। १९२० मे पाठकों की सम्मति कमेटी (Readers Advisory Services) की स्थापना पुस्तकालयों में हुई। इसी के फलस्वरूप पुस्तकालयों में आज के वर्तमान प्रौढ़ शिक्षा के प्रोग्राम देखे जाते है जिन्होंने कि अमरीका के पुस्तकालयों में एक नई जागृति का संचार किया।

पाठकों के परामर्शदाता के लिए कुछ बातें जाननी आवश्यक थीं। उसके लिए आवश्यक था कि वह बहुत से विषयों से न केवल परिचित हो वरन् उसको यह भी ज्ञात हो कि सब प्रकार के ज्ञान का किस प्रकार से प्रयोग किया जा सके; क्योंकि उसको हर प्रकार के लोगों को समझना पड़ता था और समझना भी। व्यक्तिगत परामर्श के लिए पुस्तकालय के परामर्श-विशेषज्ञ का कमरा पृथक् कर दिया गया था। शीघ्र ही यह प्रगट हो गया कि बहुत से लोगों को पुस्तकालय का ठीक प्रयोग करने के लिए सहायता की आवश्यकता है।

इन्हीं लोगों की शिक्षा, रुचि तथा आवश्यकता को देखकर लोगों के लिए पुस्तकालय के परामर्श के विषय चुने गये। दूसरे यह भी आवश्यक हो गया कि केवल पुस्तकों के नाम देने से ही काम पूर्ण नहीं हो जाता, वरन् यह भी आवश्यक है कि संक्षिप्त में उनके वर्णित विषय का ब्योरा भी दिया जाये। परन्तु कुछ ही दिनों में सम्मति-कमेटी के अधिकारी को ज्ञात हो गया कि जनता की मांग को केवल उसी के द्वारा पूरी करना कठिन है। पाठक बहुत से विषयों पर सहायता चाहते थे जैसे कि सामाजिक, स्वास्थ्य, मानसिक विकास तथा भिन्न-भिन्न पेशों का ज्ञान इत्यादि। इसको पूर्ण रूप से पूरा करने के लिये उन्होंने इन संस्थाओं की सूची तैयार की और अपने पाठकों को उन संस्थाओं में विशेषज्ञों के पास भेजने लगे, परन्तु इससे उनका काम और भी बढ़ गया। उन्हे पुस्तकालय की पुस्तके खरीदने की अपनी व्यवस्था

को भी इसी कारण बदलना पड़ा तथा यहां के कर्मचारियों के लैक्चर तथा वार्तालाप के लिए मांग बढ़ गई। इस प्रकार इसका क्षेत्र दिन पर दिन विशाल होता गया और उन्हें 'Reading Bureau' खोलना पड़ा जो कि पाठकों को परामर्श देता था कि उन्हें क्या और कैसे पढ़ना चाहिये और अन्त में अपने पुस्तकालय की सेवाओं को नगर की दूसरी सेवाओं से संगठित व संयोजित करने के लिए उनमें प्रौढ़ शिक्षा सम्मति 'Adult Education Council' का दफ्तर खुला। और इस प्रकार से पुस्तकालय प्रौढ़ शिक्षा प्रचार के मुख्य केन्द्र बन गये ।

बोस्टन नगर का सुविख्यात सार्वजनिक पुस्तकालय इसका जीता-जागता नमूना है। इसके विशाल भवन में अमरीका के प्राचीन इतिहास के चित्र हैं तथा सायंकाल में लोगों की मानसिक और शारीरिक उन्नति के लिए संगठित कक्षाएं आज अमरीका के इस सार्वजनिक पुस्तकालय को अब प्रौढ़ शिक्षा का गढ़ बना रहे हैं तथा यहां की विकास सेवाएं नगर, प्रान्त तथा ग्राम के दूर-दूर के कोनों में भी अपनी अमूल्य सेवाओं से बूढ़े, जवान, स्त्री व पुरुष सब की सेवा करती हैं। प्रत्येक प्रान्त में उनकी सहायता के लिए कार्यालय खुले हैं तथा निःशुल्क पुस्तकें वितरण होती है। किसी स्थान पर स्थित पाठक एक पोस्टकार्ड डालकर इस कार्यालय से सहायता प्राप्त कर सकता है।

ये लोग वाचनालय को भी आकर्षित तथा पाठकों के बैठने के लिए आरामदय बनाने का भरसक प्रयत्न करते है। दीवारों पर

चित्रों व नक्शों को सुन्दरता से सजाते हैं। एक मेज़ पर सुन्दर, आकर्षक साप्ताहिक व मासिक-पत्र या मनोरंजक पुस्तकें रखी रहती है और बैठने को पास ही मे आराम-कुर्सियां पड़ी रहती है। समय-समय पर पुस्तकालय-विशेषज्ञ पुस्तकालयों के नये तरीकों पर तथा अन्य विषयों पर दूसरे लोग भी बोलते हैं, तथा पढ़ने वाले लोगों की मंदगति को बढ़ाने के लिए भी आयोजन करते हैं।

आजकल प्रायः शिक्षा के विकास के लिए ही वहां के पुस्तकालयों ने चलचित्र विभाग और भाषा सिखाने के लिए फोनोग्राफ विभाग भी खोल लिए है। कहीं-कहीं पर लोगों के लाभ के लिए रेडियो और टैलिविज़न का पुस्तकालय में भी समय-समय पर प्रयोग करते हैं और स्वयं भी कभी-कभी इनके स्टेशनों से बोलते हैं। जैसा कि मैंने पहले बताया था कि यहा के पुस्तकालय लोगों को व्यक्तिगत लाभ पहुंचाने में प्रयत्नशील हैं, उसी प्रकार अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचकर जातीय व सामुदायिक सेवा में भी तत्पर हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष अब इस बात को समझ गये हैं कि उनका क्षेत्र अब पुस्तकालय तक सीमित न होकर वास्तव में पुस्तकालय की चहारदीवारी से बाहर है।

बालकों के पुस्तकालय तथा इस विकास सेवा के कारण से ही वहां पुस्तकालय द्वारा माता-पिता की सेवा विभाग खुलना भी स्वाभाविक ही था।

माताओं से सम्बन्ध स्थापित करने तथा यह सिखाने के लिए कि वे बच्चों में पुस्तकों का प्रेम कैसे पैदा करें, पुस्तकाध्यक्षों को

समुदायों में जाना पड़ता है। स्त्रियों, माता-पिताओं, अध्यापकों तथा धार्मिक संस्थाओं से बातचीत करनी पड़ती है। बालकों के साहित्य पर वाद-विवाद, बच्चों की रक्षा, स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, पौष्टिक तत्व और चरित्र-गठन आदि विषयों की पुस्तकों की मांग को बढ़ाता है। दिन-प्रतिदिन विवाह, गृह-निर्माण, बागवानी, गृह-विज्ञान की समस्याएं तथा पारिवारिक लेखे-जोखे पर प्रश्न पूछे जाने लगते हैं। उनकी इस बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए पुस्तकालयों को इन विषयों पर छोटे-छोटे पैम्फ़लेट, चित्रपट तथा और बहुत-सी श्रवणीय तथा दर्शनीय (Audio-visual) सामग्री एकत्रित करनी पड़ती है। यह संग्रह या तो बच्चों के विभाग में अथवा प्रौढ़ शिक्षा के विभाग मे रक्खा जाता है। कहीं-कहीं पुस्तकालयों ने माता-पिता के लिए कमरा (Parents Room) परिवार तथा जीवन सम्बन्धी विभाग (Family Life Department) परिवार कमरा (Family Room), शिशु-स्वास्थ्य केन्द्र (Baby Clinic), परिवार में जीवित रहने की शिक्षा इत्यादि (Education for Family Living) नामों से भी अलग विभाग खोले हैं। परिवार की रात्रि (Family Night) तथा माताओं की कक्षा (Mother's Study Class) का भी प्रबन्ध करते हैं जहाँ कि महत्वपूर्ण विषयों पर चित्रपट तथा पठनीय साहित्य का प्रबन्ध किया जाता है। जहाँ पर स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय नहीं हैं वहाँ का भार प्रदेशीय सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

स्कूल व कालिज छोड़ने वाले नवयुवक व युवतियां अपना

बहुत-सा समय गंदे नाविल पढ़ने मे व्यतीत करते हैं। इससे उनकी सुरक्षा करने के लिये पुस्तकालय तथा शिक्षणालय के अध्यक्षों ने नवयुवकों का कोना (Young People's Alcove) भी पुस्तकालय में सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है जहाँ कि आकर्षक तथा मनोरञ्जक पुस्तकें उनका मन बहला सकें। नवयुवक क्या चाहते हैं और उनकी क्या समस्याएं हैं इसके मनन द्वारा उन्होंने उनकी रुचि के विषयों की पुस्तकों का चुनाव किया है। इन पुस्तकालयों ने बहुत-सी बार गली में घूमने वाले बालकों का उद्धार करके उनको स्वस्थ, मनोरञ्जक तथा शिक्षा के कार्यों में प्रविष्ट किया।

इसके अतिरिक्त अब इनका ध्यान मजदूर तथा उनके मालिकों की ओर भी आकर्षित हुआ। ये पुस्तकालय अपनी सेवाएं व्यापार संघ के द्वारा मजदूरों को और दूसरे व्यवसाय के लोगों को भी अर्पित करते हैं। इस विषय मे अकरों ओहियो (Akron Ohio) तथा मिलवाकी (Milwauke) के सार्वजनिक पुस्तकालयों ने अच्छी प्रगति दिखाई है। इन्होंने इस विषय की पुस्तकों को चार भागों में विभक्त किया है—'आज की सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याएं', 'आर्थिक समस्याएं', 'व्यापारिक संघ', 'मजदूरों की समस्याएं और साहित्य'।

ग्राम्य सेवाओं के लिए बहुत-सी संस्थाएं क्षेत्र में हैं। इनमें से सब से मुख्य 'Co-operative Extention Service of the United States Department of Agriculture है' जो कि

दस वर्ष से अपना देशव्यापी ग्राम्य शिक्षा का कार्यक्रम सफलता-पूर्वक चला रही है। इसने अपने कार्यक्रम को सहायता के लिए लोगों को ३०,०००००० बुलेटिन, पर्चे, गश्ती चिट्ठियाँ बाँटीं। दूसरी महत्वपूर्ण ग्राम्य संस्थाएं नैशनल ग्रांज तथा फ़ारमर्ज़ यूनियन हैं जिनका उद्देश्य शिक्षा द्वारा ग्रामीणों की उन्नति करना है। इनकी सेवाएं घूमते हुए पुस्तकालय द्वारा देश के सुदूरवर्त्ती ग्रामों में भी पहुँचती हैं।

इन सब सेवाओं का संगठन प्रौढ़ शिक्षा समिति (Adults Education Council) द्वारा होता है जिसके अन्दर भिन्न-भिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं तथा इनकी सभाएं सार्वजनिक पुस्तकालय में होती हैं। मुझे अपने भ्रमण में डनवर (Denver) के सार्वजनिक पुस्तकालय की कौंसिल की अध्यक्षा से उनकी प्रौढ़ शिक्षा की सेवाओं तथा संगठन के विषय में बहुत कुछ सीखने को मिला।

उन्होंने बताया कि इस कौंसिल के उद्देश्य हैं:—

(१) एक ऐसे सूचनालय की स्थापना कि जिससे जनता को प्रौढ़ शिक्षा के जो सुअवसर वर्तमान हैं उनका ज्ञान प्राप्त हो सके।

(२) जो ज्ञान व सुअवसर प्राप्त हो चुके हैं उनको फिर दुबारा संग्रह करने में समय को नष्ट करने से लोगों को बचाना।

(३) सहयोग से योजनाओं की व्यवस्था करना।

(४) प्रौढ़-शिक्षा के प्रसार के लिए प्रचार करना।

(५) नेतृत्व-प्रशिक्षण के लिए केन्द्र खोलने की व्यवस्था करना।

डैनवर की यह कौंसिल संयुक्त राष्ट्र अमेरिकी को एक सब से अधिक लाभप्रद, प्रगतिशील व सफल कौंसिल है। प्रौढ़-शिक्षा की सरकारी व गैरसरकारी ८५ से भी अधिक की संस्थाएं इस कौंसिल की सदस्य हैं और इसकी सेवाओं से लाभ उठाती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालयों में प्रौढ़-शिक्षा के भविष्य का वर्णन करते हुए युनाइटेड-नेशन पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष कार्ल एच० मिलम (Carl H. Milam) ने कहा कि वास्तव में इन पुस्तकालयों का उद्देश्य ऐसे लोगों की सेवा करना होना चाहिए कि जिनका पुस्तक-मनन का कोई आशय हो और शिक्षा-संस्थाओं को इन्हे अपना पूरा सहयोग प्रदान करना चाहिए।

वास्तव मे पुस्तकालयों को लोगों को अपने ध्येय की ओर अग्रसर होने में सहायता करनी चाहिए। लोग किस प्रकार राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक क्षेत्र में प्रकाशित पुस्तकों के ज्ञान-भण्डार का प्रयोग करें, इस ज्ञान का वितरण पुस्तकालयों द्वारा ही होना चाहिये। पुस्तकालयों का उद्देश्य यह बताना नहीं है कि लोग क्या सोचें वरन उन्हे यह मालूम होना चाहिए कि किस की बावत सोचें। साधारण विज्ञान और सामाजिक ज्ञान से कोई भी समुदाय व बस्ती वंचित न रहे यही उनका लक्ष्य हो।